आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" सितम्बर 2024

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 36
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

। वर्ष –25 । अंक–08 । भाद्रपद – आश्विन स.2081 । सितम्बर 2024

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विन्धं कुरू में देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

अर्थात : जो वक्रतुण्ड है, जो महाकाय है, जो करोड़ों सूर्यों के समान दीप्ति वाले है ऐसे देव (श्री गणेश जी महाराज) मेरे लिये सभी कार्यों में, सभी अवस्थाओं में निविन्धता प्रदान करने की कृपा करें।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

Sadar Shradhanjali

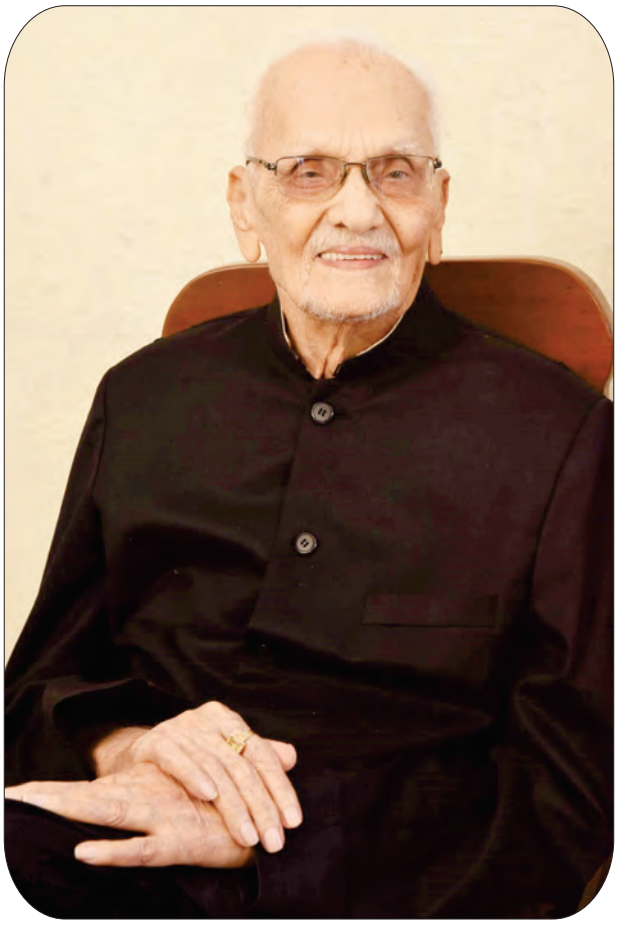

You were a pure soul.
In Loving memory:

Late Sri Abinash Chandra Chowbey

Karhal / Kolkata.
You shall remain in our hearts forever.
Date of Birth: **30th August 1928**
Moksha Prapti - **6th May 2024**

Fondly remembered and missed tremendously.

Wife	:	Smt. Suman Chowbey
Son	:	Sanjay Chaubey
Daughter in law	:	Sulochana Chaubey
Grandson	:	Arijit Chaubey
Daughter	:	Sarika Chaturvedi.
Grandson	:	Abhishek Chaturvedi.

Address: 12G Ideal Towers Block B 57Diamond Harbour Road Kolkata 700023
Mob: **Smt. Suman Chowbey - 9830451263**
Sanjay Chaubey - 98302 20966

श्रद्धांजली

स्व. श्रीमती शान्ती देवी (जावित्री देवी)

पत्नी स्व. श्री बैकुण्ठ नाथ चतुर्वेदी (हिन्डौन)

जन्म : 01 जनवरी 1928

गोलोक गमन : 18 जुलाई 2024

आपके आदर्श, संस्कार तथा स्नेहासिक्त सरल मुस्कान, हम सभी को हमेशा प्रेरणा देती रहेगी।

शोकाकुल

पुत्र–पुत्रवधू	:	प्रभाकर–मीना, शरद–रचना
पुत्री–दामाद	:	सन्ध्या, निशा–मधुर, सीमा–मुकेश
भतीजी–भतीजे	:	बबिता, संगीता, राखी, काजल, पारुल, निकेत
नाती–नतबहू	:	वैभव–शिवानी
नातिन–दामाद	:	गरिमा–विवेक, भव्या, श्रेया
नाती के बच्चे	:	सृजा,धृती

प्रभाकर चतुर्वेदी

पता : के – 1088 आशियना, कानपुर रोड, लखनऊ 226012

मोबाइल नंबर : 9935511088

(र.क. 2508)

श्रद्धांजलि

स्व. सुरेश चन्द्र मिश्रा (स्वामी जी)

पुत्र : स्व. दयाराम चतुर्वेदी एवं सरस्वती चतुर्वेदी (कम्पिल)

आपकी मधुर स्मृति एवं मार्गदर्शन हमारे प्रेरणा स्त्रोत रहेंगे ।

श्रद्धावनत

पत्नि	:	श्रीमती मुन्नी मिश्रा
पुत्र–पुत्रवधु	:	नितिन – सुजाता
		संदीप – विशाखा
		अभिनव – लवली
पुत्री–दामाद	:	प्राची – किशोर
		प्रीती – ज्ञानेन्द्र
पौत्र–पौत्री	:	उदित, सौमिल, इरित,
		मधुरा, प्रयाग, धैर्य

नितिन मिश्रा

कम्पिल, फरूखाबाद

मो. : 7767061079, 9450009039

(र.क्र. 2300)

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से अपनी बात	7
संपादकीय	8
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का 35 वाँ अधिवेशन - मंत्री का प्रतिवेदन	10
जुगनू - टिमटिमाता कीट ???	12
रिसोर्ट मे विवाह सामाजिक बीमारी ??	13
मौत ए मोबाइल	14
संविधान संशोधन की रिपोर्ट	15
डिजिटल अरेस्ट	16
हिन्दी और उसकी क्षेत्रीय बोलियाँ	17
आपके शरीर अंग, करते सावधान	19
नीड़ का बिरवा	20
गया में पिंडदान क्यों	23
पनीर : आधुनिक युग में बीमारियों का सबसे बड़ा कारण	24
त्याग पूर्वक भोग	25
महिलाओं में गहनों की महत्ता	26
संपादक के नाम पत्र	29
शाखा समाचार	30
समाज समाचार	32
बिछड़े स्वजन	32

अंक 08
सितम्बर 2024, वर्ष - 25

सभापति
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री शशांक चतुर्वेदी
मोबा. 9826086879

कोषाध्यक्ष
श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 9312242661

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. विनीता चौबे, भोपाल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', BM57, नेहरू नगर
करूणाधाम आश्रम के सामने, भोपाल
मोबा. 8707894349
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

उपसंपादक
लोकेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, गाजियाबाद

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED
10292296@cbin
BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका
वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : शशांक चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक : **दिलीप सिकन्दरपुरिया**
वितरण सहयोगी : विश्वास चतुर्वेदी - 8160686094

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी समिति 2024–2027

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक :- सर्वश्री सतीश चतुर्वेदी, श्री भरत चतुर्वेदी (पूर्व सभापति), श्री आर.आर. चतुर्वेदी, मुम्बई (पूर्व सभापति), श्री कमलेश पाण्डे, नोयडा (पूर्व सभापति), डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (पूर्व सभापति), ले जनरल विष्णुकांत, श्री विकास चतुर्वेदी (कानपुर), श्री संतोष चौबे (भोपाल), श्री देवेन्द्र चौबे (गोंदिया), श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली) ।

परामर्श मण्डल :- (1) सर्वश्री अविनाश जी (कानपुर) (2) श्री कैलाश जी (कासगंज) (3) श्री ऋषभ जी (देहरादून) (4) श्री उपेन्द्र पाण्डे (कोलकता) (5) श्री भरत जी (रिषड़ा) (6) श्री शिवजी (कोटा) (7) श्रीमती बीना मिश्रा (मैनपुरी/आगरा), (8) डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)

सभापति :- श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी

उप-सभापति :- सर्वश्री श्री मुनीन्द्र नाथ जी (नोयडा), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्रीमती आभा चतुर्वेदी (नागपुर),. डॉ कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री विनोद चतुर्वेदी (गुरूग्राम), श्री सुमंत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अंशुमन चतुर्वेदी (जयपुर)

सचिव :- श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल)

सह-सचिव :- श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री करूणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री गोविन्द चतुर्वेदी (जयपुर), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरूग्राम), श्रीमती बबीता चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री मनीष चतुर्वेदी (कोटा), संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद)

कोषाध्यक्ष :- श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी (साहिबाबाद)

सम्पादक :- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ) उपसम्पादक :– श्री लोकेन्द्र (गाजियाबाद)

मा. कार्यकारिणी सदस्यगण :- (1) श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई) (2) श्री लोकेन्द्र (गाजियाबाद) (3) डॉ. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा) (4) श्री भुवनेश कुमार चौबे (गोदिंया) (5) श्री अजय चौबे (भोपाल) (6) श्री राकेश कुमार चतुर्वेदी, चुनचुन (बरेली) (7) श्री विशाल चतुर्वेदी (आगरा) (8) श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी) (9) श्री प्रदीप चतुर्वेदी(संजू) गाजियाबाद (10) श्री राजीव चतुर्वेदी (अहमदावाद) (11) श्री विवेक (मुम्बई) (12) श्री विपिन (लखनऊ) (13) श्री मनीष चतुर्वेदी (दिल्ली) (14) श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ) (15) श्रीमती विनीता (देहरादून) (16) श्री कृष्ण बल्लभ (बिलासपुर) (17) श्री संजय मिश्रा (कानपुर) (18) श्री सुदीप (फिरोजाबाद) (19) श्री अभिषेक (ग्वालियर) (20) श्री आशीष रानू (आगरा) (21) श्री प्रवेश (कानपुर) (22) श्री आशीष सुभाष (आगरा) (23) श्री हर्षमोहन (आगरा) (24) श्री आलोक चतुर्वेदी (कोटा) (25) श्री सतेन्द्र चतुर्वेदी (नोयडा) (26) श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी (भोपाल) (27) श्री नवीन (जहांगीरपुर/लखनऊ) (28) श्री सौरभ (लखनऊ) (29) श्रीमती अंजु (मुम्बई) (30) श्रीमती अर्चना (जयपुर) (31) श्रीमती इंदु (नोयडा) 32) श्री नवीन (चैन्नई) (33) श्री हितेष (पुरा) (34) श्री तनुज चौबे (नागपुर) (35) श्री अरूण चतुर्वेदी (जयपुर) (36) श्री हर्ष कमल (बनारस) (37) श्रीमती अलका (करनाल) (38) श्री विमल (नोयडा) (39) श्री मनोज (सागर) (40) श्रीमती क्षमा (ग्वालियर) (41) श्री प्रवेश चांपा (छत्तीसगढ़) (42) श्री कृष्णकांत (हैदराबाद) (43) श्रीमती मीता चतुर्वेदी (कानपुर) (44) श्री अनुराग बब्बल (आगरा) (45) श्री मधुपम चतुर्वेदी (बम्बई) (46) श्री धनेश चतुर्वेदी (जहांगीरपुर/साहिबाबाद) (47) श्री कैलाश चतुर्वेदी (देवास) (48) डॉ. मीनाक्ष चतुर्वेदी (भोपाल) (49) श्री मुकेश गिरिश पाण्डे (कोलकाता) (50) श्री गगन चतुर्वेदी (पुरा कन्हैरा)

स्थाई आमंत्रित :- (1) सर्वश्री मनोज जी (बैंगलोर) (2) श्री पदम जी (लखनऊ) (3) श्री अशोक जी (फरीदाबाद) (4) श्री गिरधारी चतुर्वेदी (जयपुर) (5) श्री कमलेश रावत जी (कोटा) (6) श्री विपिन पाण्डे जी (गाजियाबाद) (7) श्री राजेन्द्रनाथ जी (इलाहबाद) (8) डॉ. अपूर्व जी (फिरोजाबाद) (9) डॉ. कपिल जी (आगरा) (10) श्री अनिल चतुर्वेदी जी (भोपाल) (11) श्री अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली) (12) श्री दिनकर राव जी चतुर्वेदी (फरौली)

विशेष आमंत्रित :- (1) श्री मधुकर पाठक (आगरा) (2) श्री नीरज चतुर्वेदी (चक्रधरपुर) (3) श्री कौशल (दिल्ली) (4) श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल) (5) श्री साकेत (मैनपुरी) (6) श्री दीपक (लखनऊ) (7) श्रीमती तृप्ति (पटना) (8) श्री अंकुर (कटनी) (9) श्री शैलेन्द्र (उचाड़) (10) श्री अनुराग टिंचू (कानपुर) (11) श्रीमती शिखा पाठक (थाणे) (12) श्रीमती अमिता (लखनऊ) (13) श्री उमेश बुलंदशहर (14) श्री ललित (जयपुर/नोयडा) (15) श्री श्यामलाल (भिण्ड) (16) श्री आलोक (जयपुर) (17) श्री संजय (लखनऊ) (18) श्रीमती मधु देहरादून (19) श्री धर्मेन्द्र कानपुर (20) श्री मनीष चतुर्वेदी (इटावा) (21) श्री पीयूष (पूना) (22) श्री जीतू (पूना) (23) श्री मधुर (बैंगलोर) (24) श्री यदुवेश (पुरा/लखनऊ) (25) श्री नवीन (बैंगलोर) (26) श्री दिलीप (हरिद्वार) (27) श्री शैलेन्द्र (फिरोजाबाद) (28) श्री प्रवीण (हैदराबाद) (29) श्री नीलकमल (कलकता) (30) श्री मुकेश कलकता (तरसोखर) (31) श्री शैलेन्द्र (फरीदाबाद) (32) श्री नरेश (भोपाल) (33) श्री विश्वास चतुर्वेदी (भोपाल (34) श्रीमती वंदना चतुर्वेदी (रिषड़ा) (35) श्री प्रशांत चतुर्वेदी (मथुरा) (36) श्री नरेन्द्र कुमार चौबे (ग्वालियर) (37) श्री भूषण (साहिबाबाद) (38) श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर) (39) श्री योगेन्द्रनाथ जी (ग्वालियर) (40) श्री अनुराग चतुर्वेदी (गुरूग्राम) (41) श्री विशाल जी (दानपुर) (42) श्री प्रवीण जी, छौना (फरौली)

मूल निवास प्रकोष्ठ :- (1) श्री गगन (पुरा) संयोजक (2) श्री जय चतुर्वेदी नानू फरौली (3) श्री गोविन्द चतुर्वेदी (जहांगीरपुर) (4) श्री सौरभ "आशू" (पुरा) (5) श्री समर्थ (होलीपुरा) (7) श्री शैलेन्द्र (फरौली) (8) श्री मधुर (पुरा) (9) श्री धर्मेन्द्र चतुर्वेदी (पिनाहट)

शाखा सभा प्रकोष्ठ :- (1) ले. जनरल विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोयडा) (2) श्री विवेक चतुर्वेदी (मुम्बई) (3) श्री अजय चतुर्वेदी (लखनऊ) (4) श्री अजय तिवारी (ग्वालियर) (6) श्री सुनील चतुर्वेदी (जयपुर) (7) श्री विनय चतुर्वेदी (कोटा) (8) श्रीमती नितीका चतुर्वेदी (गुरूग्राम) (9) श्री सुमंत चतुर्वेदी (भोपाल) (10) श्री प्रदीप चतुर्वेदी (गाजियाबाद) (11) श्री सुशील चतुर्वेदी (फरीदाबाद) (12) श्री हरेश चतुर्वेदी (आगरा) (13) श्री मुकेश चतुर्वेदी (आगरा) (15) श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद) (16) श्री पंकज चतुर्वेदी (हरदोई)

युवा प्रकोष्ठ :- (1) श्री मधुपम– मुम्बई (संयोजक) (2) श्री खगेश (कोलकता) सह–संयोजक (3) श्री नवीन (मथुरा) (4) श्री प्रमेन्द्र (ग्वालियर) (5) श्री आशीष (कोलकाता) (6) श्री नमन (फिरोजाबाद) (7) श्री सुनील (जयपुर) (8) श्री हेमंत (कोलकाता) (9) श्री नमन (लखनऊ) (10) श्री दिवस (लखनऊ) (11) श्री शशांक (जमुआरामगढ़)

प्रवासी भारतीय प्रकोष्ठ :- (1) श्री विवेक चतुर्वेदी–संयोजक (मम्बई)

चिकित्सा प्रकोष्ठ :- (3) डॉ. मीनाक्ष–संयोजक (भोपाल)

उद्यमिता प्रकोष्ठ :- (1) प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)

महासभा कार्यालय : 405/406, चिरंजीव टावर नेहरू प्लेस, नई दिल्ली 110019

।। अपनों से अपनी बात।।

● उषा चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

आदरणीय बंधुवर/भगिनी
सादर पालागन

दुश्मनों में भी दोस्त मिला करते हैं। जन्नतों में भी फूल खिला करते हैं।
हमको कांटा समझ कर छोड़ मत देना। कांटे ही फूल के हिफाज़त किया करते हैं।।

मैं सर्वप्रथम उन बॉधवों/ भगिनियों को धन्यवाद प्रेषित करती हूँ जो राष्ट्रीय कार्यकारिणी की प्रथम बैठक के पश्चात महासभा को और मजबूत करने के लिए सदस्यता अभियान में लगे हैं। मैं निरंतर उनकी पोस्टों को पढ़ती रहती हूँ और एक आनन्द की अनुभूति मन में उत्पन्न होती। हमें किसी से कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है, सभापति के पद का दायित्व होने के कारण मेरा कर्तव्य बनता है कि सभी साथियों को साथ लेकर महासभा के हाथों को मजबूत करें। मेरा समाज के सभी बंधुओ से आग्रह महासभा को आर्थिक रूप से भी सुदृढ करने की आवश्यकता है। इसके लिए हमारी पूर्व में संचालित गुल्लक योजना भी सुचारू रूप से संचालित होती रहे। हरियाली तीज का त्यौहार, एवं पवित्र मास सावन बड़े उत्साह से बहनों ने मनाया।

विभिन्न शाखा सभाओं से हरियाली तीज के कार्यक्रम की सूचना प्राप्त हुई। उन सभी शाखा सभाओं के अध्यक्षों से आग्रह है हरियाली तीज उत्सव के समाचार अवश्य भेजें ताकि उनको प्रकाशित किया जा सके। प्रकाशित करने का हेतु आपके सामने स्पष्ट है अन्य बांधव एवं भगिनी इससे एक प्रेरणा लेते हैं और अन्य कोई कार्यक्रम करने का प्रयास करते हैं।

"मिलते रहिए किसी न किसी बहाने से।
प्रेम और स्नेह बढ़ता है दो पल साथ बिताने से।"

वह बहनें भी साधु-बाद की पात्र हैं जिन्होंने हरियाली तीज का उत्सव सामूहिक रूप से मनाया। चतुर्वेदी समाज की सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने के लिए इस तरह के कार्यक्रम करना आवश्यक है।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की महिला प्रकोष्ठ एवं भोपाल चतुर्वेदी गुइयाँ के माध्यम से ऑनलाइन अखिल भारतीय स्तर पर कजरी मल्हार और सावन के गीतों का कार्यक्रम संपन्न हुआ। 70 बहनों की भागीदारी रही इतनी बड़ी संख्या में भागीदारी करना महासभा और अपनी संस्कृति को जीवित रखने के लिए उनकी संकल्प शक्ति प्रदर्शित करती है। शाखा सभाओं के सम्मानीय अध्यक्षों से इस बात का भी आग्रह है। ऑनलाइन मीटिंग करने के लिए अपनी सुविधा अनुसार दिनाँक लिखित में पत्र के माध्यम से भेजने का कष्ट करें ताकि शीघ्र ही यह कार्यक्रम की योजना को क्रियान्वित किया जा सके। सितंबर माह तक आवश्यक रूप से मीटिंग हेतु दिनांक भेजने का आग्रह है। चतुर्वेदी चंद्रिका के भीअधिक से अधिक सदस्य बने ताकि समाज की गतिविधियों से आप लोग अवगत हो सके। आप सभी लोगों को विशेष कर हमारी बहनों को हरतालिका तीज की एवं गणेश चतुर्थी की अग्रिम शुभकामनाएं। पावस ऋतु का सुहाना मौसम है और शाखा सभाओं से निरंतर गोट (सामूहिक मिलन) कार्यक्रम करने के समाचार भी प्राप्त हुए हैं जो हमारी जीवंता एवं सामूहिक एकता को प्रदर्शित कर रहे हैं। 15 सितंबर को राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक दिल्ली में आहुत होने वाली है। बैठक में जो आगामी कार्यक्रम निर्धारित होंगे इसकी सूचना आपको प्रदान की जाएगी।

समाज के बहुत से बांधव इस बीच हमसे बिछड़ गए। उन सभी लोगों को मैं स्वयं अपनी ओर से और महासभा की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती हैं।

जय समाज जय संगठन

■ श्री विनोद चतुर्वेदी के सुपुत्र श्री प्रतीक चतुर्वेदी एवं श्रीमती शिखा चतुर्वेदी (मैनपुरी/लखनऊ) ने दिनांक 21 अगस्त 2024 से 24 देश की यात्रा के लिए प्रस्थान किया है। यह यात्रा मोटरसाइकिल द्वारा पूर्ण की जाएगी। इस साहसिक कार्य के लिए श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की ओर से शुभ आशीर्वाद एवं मंगलमय यात्रा की शुभकामनाएं।श्रीमती उषा चतुर्वेदी सभापति

संपादकीय

चंद्रिका परिवार में सभी का हार्दिक अभिनंदन, सप्रेम पालागन।

चंद्रिका के जुलाई-अगस्त अंक के साथ ही नयी सम्पादकीय टीम की परीक्षा शुरू हो गई, अभी लोगो से प्रशंसा एवं बधाईयों का तांता लगा है, हमको डर लगता है कि इससे आत्ममुग्धता बढ़ सकती हैं, अतएव आप अंक की समालोचना करते हुए लिखित में ही भेजें। इधर महासभा का सदस्यता अभियान जोरों से चल रहा है, इसके लिए सक्रिय लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं, लेकिन कार्यकारिणी के कुछ सदस्य अभी भी सक्रिय होने की योजना हेतु सोच रहे हैं।

बोले तो –

सबसे बड़ा रोग, लिखते नहीं लोग।

हमने पाठकों से लिखित में सुझाव एवं आलेख मांगे थे, लेकिन प्रायः लोगों ने लिखने में असमर्थता व्यक्त करते हुए फोन पर ही चर्चा की , खैर मौखिक अभिव्यक्ति भी काफी उपयोगी रहीं। कुछ विचार विमर्श तो काफी सार्थक एवं सारगर्भित रहे, यदि यही विचार लिखित में आते तो चंद्रिका में भी सार्थक परिचर्चा संभव हो सकती थी।

उदाहरण स्वरुप एक महिला ने सुझाव दिया कि हर महीने एक संस्कार का वर्णन दे, इसी के साथ उन्होंने परिवार में सामूहिक पूजा एवं भोजन करने की उपयोगिता पर प्रकाश डाला,पर लिखना ?? इसी तरह एक सज्जन ने कहा कि अन्नपूर्णा योजना लगभग 12-13 साल से चल रही है, संभव है कि कुछ परिवार क्रीमी लेयर की सीमा में आ गए हो तो उन्हें स्वतः प्रेरित होकर योजना का लाभ छोड़ देना चाहिए। हम पुनः सबसे आग्रह करते हैं कि लिखित में ही अपने-अपने विचार एवं सुझाव भेजें।

पत्रिका न मिलने शिकायत भी मौखिक रूप से मिलती हैं, ग्राहक संख्या तो संस्था को ही पता होगी ?? हमने पहली सम्पादकीय में प्रमुखता से पत्रिका वितरण पर लिखित सुझाव मांगे थे, लेकिन एक भी लिखित सुझाव नहीं मिला, लेकिन फोन पर मिले कुछ सुझाव इस प्रकार रहेः-----

1.सभी चंद्रिका सदस्यों से पंजीकृत डाक से भेजने हेतु रु 300/ प्रतिवर्ष शुल्क देने का अनुरोध किया जाए।

2.हर शहर में किसी एक के पास सभी सदस्यों की पत्रिका भेजें, फिर कार्यकारिणी सदस्य आपसी सहयोग से वितरण कर दें।

3.डिजिटल युग में आंनलाइन कोर्स की तरह केवल pdf ही भेजें,जिसको जरूरत हो तो प्रिंट आउट निकालवा ले। महासभा ने भी भोपाल में भी विश्वास जी को वितरण सहयोगी की जिम्मेदारी दी है, हमारा विश्वास है कि सभी के सहयोग से शीघ्र ही चंद्रिका सबको मिलेगी।

भोपाल अधिवेशन के संदर्भ में सम्पादक के नाम पत्र भेजने के लिए डॉ मनीष जी, डॉ कुश जी, डॉ रचना जी,मधुपम जी,भारत भूषण जी,हरेश जी, वीना जी,अनुराग टिंचू जी, संजय मिश्रा जी, मनीष जी, संजय होली पुरिया जी एवं अनुराग जी को अपनी लेखनी उठाने के लिए हार्दिक धन्यवाद।

चंद्रिका के इस अंक को पाठकों तक पहुंचाने में अध्यक्षा उषा जी एवं मंत्री -- प्रकाशक शंशाक जी का असाधारण सहयोग मिला, जिसका वर्णन शब्दों से परे है।

हरतालिका, गणेश चतुर्थी एवं शिक्षक दिवस, हिन्दी दिवस पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएं ।

आपके सुझाव, आलेख एवं सहयोग का आकांक्षी.....

– दिलीप सिकंदरपुरिया, लखनऊ

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

सदस्यता आवेदन प्रपत्र

सेवा में,

मंत्री,
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा।

महोदय,

मैं श्री/श्रीमती/सुश्री.....सुपुत्र/पत्नी ..... मूल निवासी ..... वर्तमान पता ..... गोत्र .....अल्ल..... जन्मतिथि .....फोन नं. .....मोबा.नं. .... ई–मेल आई.डी ..... श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की कुल क्रमागत/आजीवन/सत्र सदस्यता/चतुर्वेदी चंद्रिका की वार्षिक/पांच वर्ष/महासभा एवं पत्रिका की संयुक्त सदस्यता ग्रहण करना चाहता हूँ एवं इस निमित्त **"श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा"** के पक्ष में देय रूपये ..... शब्दों में..... डिजिटल डायरेक्ट ट्रांसफर/नगद/चेक एटपार/बैंक ड्राफ्ट द्वारा प्रदान कर रहा हूँ। प्रमाणित छायाप्रति संलग्न है।

मैं सत्यापित करता हूँ कि –

1. मैं 18 वर्ष से अधिक आयु का माथुर चतुर्वेदी हूँ।
2. मैं घोषणा करता हूं कि मैने महासभा की कुल क्रमांगत/आजीवन/सत्र (किसी एक) सदस्यता के लिए आवेदन कर रहा हूँ।
3. दिनांक 16.06.2024 को महासभा के अधिवेशन में पारित महासभा के संशोधित संविधान 2024 के प्रति मेरी पूर्ण आस्था एवं निष्ठा है तथा तत्–निहित नियमों, उपनियमों, धाराओं, उपधाराओं आदि के पालन के लिये वचनबद्ध हूँ।
4. यदि संज्ञान में आता है कि महासभा से संबद्ध/आस्था रखने वाली माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा/सभा के अतरिक्त मैं किसी अन्य माथुर चतुर्वेदी संस्था का सदस्य हूं तो मेरी श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की सदस्यता स्वतः ही निरस्त मानी जाए इसमें मेरी पूर्ण स्वीकारोक्ति होगी।

दिनांकः भवदीय

संलग्नकः स्व–सत्यापित (ओरिजनल ब्लू इंक)
आधार कार्ड की छायाप्रति

हस्ताक्षर –
नाम–

1. **महासभा का आजीवन सदस्य पत्रिका का 05 वर्षीय सदस्य बन सकता है तथा महासभा का सत्र सदस्य पत्रिका की वार्षिक सदस्यता ग्रहण कर सकेगा।**
2. **मैं ..... उपरोक्त सदस्यता आवेदन पत्र में दिये गये सभी विवरण को महासभा के सदस्यता हेतु सत्यापित करता हूँ।**

हस्ताक्षर –
नाम –
कार्यकारिणी सदस्य
मोबाईल नंबर

महासभा सदस्यता शुल्क	**पत्रिका सदस्यता शुल्क**	**महासभा आजीवन एवं 5 वर्षीय पत्रिका संयुक्त**
कुल क्रमागत रूपये 5001/–	वार्षिक रूपये– 251/– (नवीनीकरण शुल्क)	सदस्यता
आजीवन सदस्यता रूपये 501/–	महासभा सत्र सदस्यता एवं पत्रिका वार्षिक सदस्यता रूपये– 352/–	रूपये – 1501/–
सत्र सदस्यता रूपये 101/–	पत्रिका (पांच वर्ष) रूपये– 1000/– (केवल महासभा सदस्यों हेतु)	

पता – मंत्री, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, 405/406 चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली– 110019

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का 35 वाँ अधिवेशन - मंत्री का प्रतिवेदन

४ अक्तूबर २०२० को श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का अधिवेशन, संपूर्ण विश्व को व्यथित करने वाली कोरोना की महामारी के मध्य १००० से ज़्यादा बांधवों लोगों को facebook पर जोड़कर online live प्रस्तुत किया गया इस प्रकार सभी बांधवों को एक नये माध्यम से जोड़कर कार्यक्रम करना एक अद्भुत प्रयोग था। १०१ वर्ष की महासभा की लंबी यात्रा वर्णन के मध्य इस महासभा के यशस्वी संस्थापकों आदरणीय श्री राय बहादुर रहे लाल जी (हौलीपुरा गडी वाले) ,राय साहब छक्कन लाल जी (होलीपुरा) दानवीर चौबे बैजनाथ जी (चन्द्रपुर / इटावा), महामहोपाध्याय पंडित गिरिधर शर्मा जी (जयपुर) श्री खेतल दस जी (मैनपुरी), श्री निर्मल दस जी (मैनपुरी) पंडित बाल किशन जी (सिकंदरपुर), पंडित विश्वेसर दयाल जी विशारद (आगरा) पंडित अयोध्या प्रसाद पाठक जी (आगरा) को समाज को उस समय की विपरीत परिस्थितियौ के मध्य , एक मंच को देने के इस अतुलनीय प्रयास को अति विनम्रतापूर्वक याद किया गया । इस अधिवेशन मैं संरक्षक श्री विष्णुकान्त जी , श्री मदन जी , श्री त्रिभुवन जी , श्रीं भरत जी तथा श्री डॉ सतीश जी ने अपने सारगर्भित विचारों से समाज को नयी दिशा तथा ऊर्जा देने वाले विचारों से मार्गदर्शन किया । इस अधिवेशन मैं डॉ प्रदीप जो के नेतृत्व मैं नवीन कार्यकारिणी के गठन की घोषणा की गई ।इस कार्यक्रम के मध्य डॉ सतीश जी तथा द्वारा २ लाख रुपये अन्नपूर्णा सहायता हेतु दिये गये तथा चंद्रिका के अंतिम पृष्ठ के वर्ष भर के विज्ञापन प्रकाशन के लिये १,२५ , ००० रुपये स्वीकृत दी ।

2. प्रथम ऑनलाइन बैठक २७ दिसंबर २०२० को ६८ सम्मानित बँधवो की उपस्थिति मैं संपन्न हुआ। पूर्व निमंत्रण के अनुसार इस बैठक का आयोजन कानपुर में होना था । स्थानीय बांधवों के सम्मान कि परम्परा की श्रृंखला में , विभिन्न क्क्षेत्रों मैं विशिष्टता प्राप्त करने तथा समाज को गौरव दिलाने के लिए, श्री विकास जी @ चुन्ना भैया , श्री मयंक जी IAS सुश्री इति को सम्मानित किया गया । अन्नपूर्णा सहायता को प्रति माह १००० रुपये से बड़ाकर २००० रुपये करने का निर्णय लिया गया । महासभा के विविध व्यय के लिए गुल्लक योजना को आरंभ करने का निर्णय लिया गया । विवाह विच्छेद निराकरण समिति तथा समाज के सम्मान तथा अलंकरण आकलन समिति का भी गठन किया गया ।
3. इस बैठक मैं महासभा की स्थापना करने वालों सम्मानित बांधवों के graphic चित्रों के साथ छापे गये कैलेंडर को जारी किया गया ।
4. दूसरी कार्यकारिणी बैठक भी online ४ अप्रैल २०२१ को आयोजित की गई । इस बैठक मैं शाखा सभाओं को प्रमाणणपत्र देने , महासभा वेब साईट चलाने तथा चतुर्वेदी चंद्रिका को स्वावलंबी बनाने के निर्णय लिये गये।
5. कोरोना महामारी के प्रकोप के कारण , तृतीय कार्यकारिणी बैठक भी ऑनलाइन १८ जुलाई २०२१ को आयोजित की गई। इस मैं अन्नपूर्णा सहायता को २६ से बड़ाकर ३७ परिवारों देने का , समाज के मूल ग्रामों के मंदिर तथा हवलियों के चित्र छापने तथा समाज के प्रतिभावान छात्रों के चित्र , चतुर्वेदी चंद्रिका में छापने के निर्णय लिये गये । यह भी सूचित किया गया कि महासभा का रजिस्ट्रेशन का ५ वर्ष के लिए नवीनीकरण कर लिया गया है । महासभा को ऑनलाइन रक़म स्थानांतरित करने के लिए एक नये gateway को लिया गया ।
6. चतुर्थ बैठक ऑनलाइन ३१ अक्टूबर २०२१ को online आयोजित की गई । इस मैं महासभा की बैलेंस शीट पारित की गई ।समाज की विभूतियों के चित्रों के साथ कैलेंडर छापने का निर्णय लिया गया । बैठक मैं डॉ राकेश जी के प्रयासों से महाविद्या मंदिर में एक boring पम्प लगवाने की सराहना की गई ।
7. वर्ष २०२२ के लिए महासभा द्वारा , दिसम्बर २०२१ के मध्य , पद्म पुरस्कारों से सम्मानित तथा उच्च न्यायाधीश के पद को सुशोभित करने वाले समाज के बांधव के चित्रों के साथ कैलेंडर जारी किया गया ।
8. पंचम कार्यकारिणी बैठक online ६ फ़रवरी २०२२ को आयोजित की गई और इस बैठक मैं हैदराबाद शाखा सभा द्वारा अन्नपूर्णा सहायता मैं ७०,००१ रुपये के सहायोग की सराहना की गयी । श्री भुवनेश जी गोंदिया ने भदावर क्षेत्र के

ग्रामो मैं महासभा द्वारा प्रकाशित कैलेंडर का निःशुल्क वितरण कराया। इस बैठक में महासभा के इतिहास के स्मारिका के प्रकाशन का भी निर्णय लिया गया । इस हेतु श्री भरत जी रिसरा के सम्पादन तथा मुनीन्द्र नाथ मंत्री तथा श्री शशांक संपादक के सहयोग के साथ एक टीम का गठन किया गया । स्मारिका हेतु , इंडोनेशिया से समाज के एक बांधव ने एक लाख रुपये का अंतिम पृष्ठ का विज्ञापन के लिए सहायोग दिया । महासभा द्वारा वृद्ध आश्रम के खोलने का प्रयास पर कोई आवेदन नन्ही प्राप्त होने के कारण, इस प्रयास को समाप्त करने का निर्णय लिया गया ।

9. षष्ठम् कार्यकारिणी की बैठक १७ जुलाई २०२२ को कोटा में वहाँ की स्थानीय शाखा सभा के निमंत्रण पर तथा श्री ललित जी के विशेष आतिथ्य के साथ आयोजित की गई । इस बैठक २०२१-२२ की बैलेंस शीट का approval की गई । प्रथम बार कार्यकारिणी बैठक मैं युवाओं के साथ विचारों का सीधा संवाद हुआ । सभापति ने अवगत कराया कि चतुर्वेदी चंद्रिका ने १७ वर्ष पूर्व अपने पूर्वजों तथा विशेष अवसरों पर रंगीन पृष्ठों के प्रकाशन के लिए प्रयास प्रारंभ किया था और अब उस का असर स्पष्ट रूप से , चंद्रिका के स्वावलंबन होने, मैं दिखाई देता है ।
10. ६ अगस्त २०२२ को वैवाहिक परिचय सम्मेलनका ऑनलाइन आयोजन किया गया । यह एक बहुत ही सफल प्रयोग रहा ।
11. कार्यकारिणी की सप्तम बैठक ६ नवंबर २०२२ को महासभा के १०१ वर्ष के इतिहास मैं प्रथम बार होलीपुरा ग्राम मैं आयोजित की गई । इस बैठक के आयोजन का आतिथेय स्थानीय बांधवों तथा डॉ सतीश जी व श्री त्रिभुवन जी द्वारा भव्य रूप से किया गया का जो इस ग्राम के लिये विशेष आकर्षण का केंद्र था । इस बैठक मैं स्थानीय स्तर पर व्यवसाय तथा रोज़गार उपलब्ध कराने पर विस्तार से चर्चा की गई ।
12. इस अवसर पर श्रीमती विनीता जी की पुस्तक चतुर्वेदी चंद्रिका का १२५ वर्षों की यात्रा तथा श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की १९२० की स्थापना बाद की एक शताब्दी की यात्रा पर प्रकाशित स्मारिका का भी लोकार्पण किया गया ।
13. वर्ष २०२३ के लिए महासभा द्वारा समाज के बांधवों के राजनीतिक क्षेत्र मैं सांसद , विधायक, मंत्री तथा पुलिस मैं महा निदेशक (DGP) पद को सुशोभित करने वालों के चित्रों के साथ कैलेंडर जारी किया ।
14. अष्टम कार्यकारिणी बैठक २६ मार्च २०२३ को ७०० पूर्व स्थापित ग्राम फ़रौली मैं १९७६ के अधिवेशन के बाद दुबारा आयोजित की गई । इस बैठक ग्राम मे सभापति के स्वागत हेतु एक शोभा यात्रा का कार्यक्रम विशेष आकर्षण का केंद्र था । इस बैठक मैं सामूहिक बीमा योजना पर श्री ललित जी लखनऊ द्वारा विस्तार से विचार रखे तथा सराहना पूर्वक चर्चा हुई । चतुर्वेदी बांधवों के एक नये भवन का उदघान भी डॉ प्रदीप जी सभापति द्वारा किया गया ।
15. नौवीं कार्यकारिणी की बैठक १३ अगस्त २०२३ को विजय क्लब आगरा मैं भव्यता पूर्ण परिवेश मैं आयोजित की गई । इस बैठक मैं , एक परिवार की सहायता हेतु , प्रथम बार सभापति की अपील पर मात्र कुछ मिनटों मैं " on the spot " एक लाख रुपये एकत्रित किए गए । स्थानीय बांधवों ने उच्चतम सामूहिक सहायोग की भावना का विशेष परिचय दिया ।
16. १० वीं कार्यकारिणी बैठक १ अक्तूबर २०२३ को मात्र २१ दिन के अल्प अवधि की सूचना पर श्री विकास जी @ चुन्ना जी के निमंत्रण पर बाबू ओंकार नाथ जी धर्मशाला , कानपुर मैं आयोजित की गई ।विशेष रूप से आमंत्रित शाखा सभाओं के सभापतियों को तथा स्थानीय बांधवों को सम्मानित किया गया। श्री विकास जी को महासभा का संरक्षक मनोनीत किया गया। चुनाव समिति का गठन, श्री गोपाल कृष्ण जी की संचालक के रूप मैं नियुक्ति के साथ किया गया ।
17. ११ वीं कार्यकारिणी बैठक २८ जनवरी २०२४ को नोएडा मैं आयोजित की गयीं । इस अवसर पर चुनाव समिति के संचालक द्वारा सभापति पद के चुनाव का परिणाम घोषित किया गया । महासभा के प्रथम महिला सभापति के रूप में श्रीमती उषा जी ७२% प्रतिशत से ज़्यादा मतों के साथ विजयी हुईं । कार्यकारिणी ने श्री गोपाल कृष्ण जी को उन के कुशलता पूर्वक चुनाव संचालन करने के लिए धन्यवाद दिया गया । इस अवसर पर संरक्षक श्री विष्णु कांत जी ने श्रीमती उषा जी को सभापति पद की शपथ दिलवाकर , पद भार ग्रहण करवाया ।श्री कमलेश पांडे जी संरक्षक ने महासभा की कम सदस्यता के विषय को लेकर भैलायी गई भ्रांति के विषय के ऊपर विस्तार से प्रकाश डाला ।
18. इस तीन वर्ष कार्यकाल मैं महासभा ने तीन बार calendar का प्रकाशन करवाया जिस मे प्रथम महासभा के संस्थापकों के चित्र , उस के बाद समाज के उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के पद को सुशोभित करने वालों के चित्र के साथ तथा उस के बाद राजनीति तथा पुलिस मैं विशिष्ट पद पाये बँधवो के चित्रों के साथ । कई माह तक trust talk के माध्यम से समाज के प्रबुद्ध जनों के आख्यानों का online आयोजन किया गया । इस शृंखला हमारे गुरुजनों के भी आशीर्वचन का ऑनलाइन लाभ मिला । शाखा की संबधता का एक नया record बनाया गया ।

प्रकोष्ठ के क्रिया कलाप

19. राष्ट्रीय महिला प्रकोष्ठ द्वारा विभिन्न गायन कार्यक्रमों माध्यम से भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों की बहनों को महिला जोड़ा गया। इस के अन्तर्गत जन्माष्टमी के अवसर पर कृष्ण के भजन, सावन मास में कजली और मल्हार, चतुर्वेदी समाज में गाए जाने वाले पारंपरिक लोकगीत, विभिन्न संस्कारों के अवसर पर गाए जाने वाले जैसे श्रीमन्त संस्कार, वर्षगांठ के ऊपर गए जाने वाली जच्चा, बन्ना तथा बन्नी एवं खोरिया। होली के अवसर पर फाग, रसिया का गायन हुआ जूम के ऊपर व्हाट्सएप ग्रुप पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। 16 अप्रैल 2024 को गूगल पर लांगुरिया का कार्यक्रम हुआ जिसमें सभी से मतदान करने की अपील की गई ।

IT प्रकोष्ठ

IT प्रकोष्ठ बहुत तेज़ी से समाज के मध्य तमाम ग्रुप बनाकर पुराने तथा नये दोनों को आधुनिक तकनीक के प्रयोग से जोड़ दिया । इस प्रकोष्ठ ने Chaturvedi business network के माध्यम से व्यवसाय तथा व्यापार मैं संलग्न बांधोगी को एक platform उपलब्ध करवाया । इस के अलावा चतुर्वेदी job listings forum , interest and industry groups , चतुर्वेदी पंडित ग्रुप , business financial services tatha Financial institution का ग्रुप बनाया । यह सारे ग्रुप जीवन के हर क्षेत्र में समाज के बांधवों को सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहा है ।

आभार

मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

जुगनू - टिमटिमाता कीट ???

रंजना चतुर्वेदी, मैनपुरी

कुछ वर्षों पहले तक गर्मी की रातों में उड़ते टिमटिमाते कीट – जुगनू ,जिसे बच्चे टार्च वाली तितली कहते थे,अब लुप्त प्राय प्रजाति लगती है, आजकल के बच्चों के लिए तो जुगनू कहानी मात्र है। वैज्ञानिकों के अनुसार जुगनू के पेट में विशेष कोशिकाएं होती है, जिनसे वह आक्सीजन ग्रहण करके शरीर में उपलब्ध ल्यूसिफरिन तत्व से मिलाने पर प्रतिक्रिया के रुप मे रोशनी उत्पन्न होती हैं।

जीव वैज्ञानिको के अनुसार जुगनूओ की अधिकतर प्रजातियां जमा पानी के पास झाड़ियों तथा जंगल के कूड़े में लार्वा के रूप में पनपती है। इनकी कुछ प्रजातियां जलीय के साथ ही शुष्क क्षेत्रों में भी पायी जाती है, लेकिन जुगनू प्रायः स्थिर पानी के पास खेत, जंगल, दलदल में पाए जाते हैं।

तितलियों एवं मधुमक्खियों की तरह जुगनूओ की संख्या लगातार कम होती जा रही है।एक शोध से पता चला है कि उत्तरी अमेरिका में जुगनू प्रजातियां में 11 फीसदी लुप्त प्राय है, भारत में भी जुगनू प्रजातियां लगातार लुप्त होती जा रही है, जिसके प्रमुख रूप से तीन कारण माने जाते हैं –

1. पेड़– पौधों के काटने से जुगनू के आवासों को नुक्सान पहुंचा है।
2. जलीय वातावरण में जहरीले रसायनों के बढ़ने से जुगनू लार्वा विकसित नहीं हो सकता।

3.प्रकाश प्रदूषण से रात्रिचर जुगनू प्रजातियां प्रभावित हो रही हैं।

नर एवं मादा जुगनू अपनी चमकती रोशनी से ही आपस में संवाद करते हैं, शोध से पता चला है कि कृत्रिम रोशनी के फैलते जाल से जुगनूओ में संवाद मुश्किल हो जाता है। कीटनाशकों के अत्याधिक प्रयोग से भी जुगनू को लुप्त होने पर प्रभाव पड़ता हैं। समाज एवं सरकार को जुगनू एवं अन्य लुप्त होती प्रजातियों को संरक्षित करने का यथासंभव प्रयास करने चाहिए।।

रिसोर्ट मे विवाह सामाजिक बीमारी ??

- आभा मिश्रा, धनबाद

कुछ समय पहले तक पास पड़ोसियों के घर लेकर शादियां निपट जाती थी। फिर शहर के अंदर मैरिज हॉल में शादियाँ होने की परंपरा चली, परंतु वह दौर भी अब समाप्ति की ओर है।

अब शहर से दूर महंगे रिसोर्ट में शादियाँ होने लगी हैं। शादी के दो दिन पूर्व से ही ये रिसोर्ट बुक करा लिया जाते हैं और शादी वाला परिवार वहां शिफ्ट हो जाता है। आगंतुक और मेहमान बाहर से सीधे वहीं आते हैं और वहीं से विदा हो जाते हैं। शहर में जिसके पास चार पहिया वाहन है वही पहुंच पाता है। दोपहिया वाहन वाले नहीं जा पाते। बुलाने वाला भी यही स्टेटस चाहता है, और वह निमंत्रण भी उसी श्रेणी के अनुसार देता है।

दो तीन तरह की श्रेणियां आजकल रखी जाने लगी है,:

1.किसको सिर्फ लेडीज संगीत में बुलाना है।

2.किसको सिर्फ रिसेप्शन में बुलाना है।

3.किसको कॉकटेल पार्टी में भी बुलाना है।

और विशेषकर VIP परिवार को इन सभी कार्यक्रमों में बुलाना है।

इस निमंत्रण में अपनापन की भावना खत्म हो चुकी है। सिर्फ मतलब के व्यक्तियों को या परिवारों को ही आमंत्रित किया जाता है।

महिला संगीत में पूरे परिवार को नाच गाना सिखाने के लिए महंगे कोरियोग्राफर 10-15 दिन ट्रेनिंग देते हैं।

मेहंदी लगाने के लिए आर्टिस्ट बुलाए जाने लगे है। मेहंदी के फंक्शन में सभी को हरी ड्रेस पहनना अनिवार्य है,जो नहीं पहनता है उसे हीन भावना से देखा जाता है, लोअर केटेगरी का मानते हैं।

फिर हल्दी की रस्म आती है, इसमें भी सभी को पीला परिधान व कुर्ता पाजामा पहनना अति आवश्यक है,इसमें भी वही समस्या है जो नहीं पहनता है उसकी इज्जत कम होती है।

इसके बाद वर निकासी होती है। Q इसमें अक्सर देखा जाता है जो लोग पंडित को दक्षिणा देने में 1 घंटे डिस्कशन करते है। वह बारात प्रोसेशन में 5 से 10 हजार नाच गाने पर उड़ा देते हैं ।

इसके बाद रिसेप्शन स्टार्ट होता है। स्टेज पर वरमाला होती है पहले लड़की और लड़के वाले मिलकर हंसी मजाक करके वरमाला करवाते थे।

आजकल स्टेज पर धुंए की धूनी छोड़कर दूल्हा-दुल्हन को अकेले छोड़ दिया जाता है, बाकी सब को दूर भगा दिया जाता है और फिल्मी स्टाइल में स्लो मोशन में वह एक दूसरे को वरमाला पहनाते है, साथ ही नकली आतिशबाजी भी होती है।

स्टेज के पास एक स्क्रीन लगा रहता है, उसमें प्रीवेडिंग सूट की वीडियो चलती रहती है। उसमें यह बताया जाता है की शादी से पहले ही लड़की लड़के से मिल चुकी है और कितने अंग प्रदर्शन वाले कपड़े पहन कर

कहीं चट्टान पर
कहीं बगीचे में
कहीं कुएं पर
कहीं बावड़ी में
कहीं श्मशान में
कहीं नकली फूलों में

अपने परिवार की इज्जत को नीलाम कर के आ गई है ।

रिसार्ट में प्रत्येक परिवार अलग-अलग कमरे में ठहरेगा।

जिसके कारण दूरदराज से आए बरसों बाद रिश्तेदारों से मिलने की उत्सुकता कहीं खत्म सी हो गई है।

सब अमीर हो गए हैं ,पैसे वाले हो गए है तो स्टेटस के चक्कर में मेल मिलाप और आपसी स्नेह खत्म हो चुका है।रस्म अदायगी पर मोबाइलों से बुलाये जाने पर कमरों से बाहर निकलते है।

सब अपने को एक दूसरे से रईस समझते है, यही अमीरीयत का दंभ उनके व्यवहार से भी झलकता है।कहने को तो रिश्तेदार की शादी में आए हुए होते हैं

परंतु अहंकार उनको यहां भी नहीं छोड़ता।वे अपना अधिकांश समय करीबियों से मिलने के बजाय अपने अपने कमरो में ही गुजार देते है।

हमारी संस्कृति को दूषित करने का बीड़ा ऐसे ही अति संपन्न वर्ग ने अपने कंधों पर उठाए रखा है।

मेरा अपने मध्यमवर्गीय समाज बंधुओं से अनुरोध है आपका पैसा है,आपने कमाया है। आपके घर खुशी का अवसर है खुशियां मनाएं, पर किसी दूसरे की देखा देखी न करें। कर्ज लेकर अपने और परिवार के मान- सम्मान को खत्म मत करिए।

जितनी आप में क्षमता है उसी के अनुसार खर्चा करिएगा,तीन घंटे के रिसेप्शन में लोगों की जीवन भर की पूंजी लग जाती है !

अपना दांपत्य जीवन सर उठा के, स्वाभिमान के साथ जिएं और खुद को अपने परिवार और अपने समाज के लिए सार्थक बनाइए ।।

इस दिखावे की सामाजिक वीमारी से दूर ही रहें।

मौत ए मोबाइल

- दिवस चतुर्वेदी, लखनऊ

अभी चार बरस पहले की है तो बात है-- तुमको एक सुंदर से डिब्बे में कई दिन की मेहनत के मेहनताने को चुका कर घर लाया था। तुमको लाने के बाद कई दिन, महीने तो बस रात दिन तुम्हारे ही चर्चे किया करता था। एक एक करके अपने सभी दोस्त यार रिश्तेदार और जान पहचान वालों से तुमको रूबरू कराया, न जाने कितनी स्मृतियां भी तुमने मेरी खुशी के लिए खुद में संजो कर रखी भी थी। मेरे जाने कितने राज भी वक्त के साथ तुम जानने लगे थे। कई बार तो तुमसे उलझन भी हो जाती थी और न जाने किसकी खीज किसका गुस्सा तुमको पटक कर भी निकाला होगा। कितना कुछ सह जाते थे तुम मेरे लिए। एक बात बताओ कैसा लगता था जब तुम जोर जोर से चिल्लाया करते थे और मैं सुनता भी नही था, जब तुमको अक्सर अपने तकिए के नीचे दबाकर मैं भूल जाया करता था और तुम रात भर दबे चुप चाप सुबह होने का इंतजार किया करते थे, जब कभी तुम सुस्त होते और मैं तुमको चार्ज नहीं किया करता था?? एक बात बता दूं तुमको मेरे जीवन का वक्त जितना तुम्हारे साथ बीता वो अदभुत था। तुम्हारी स्मृतियां मेरे जेहन में ही नही बल्कि मेरी जींस की पॉकेट पर भी अपनी अमिट छाप छोड़ गई हैं। मेरी हर खुशी का पल सबसे पहले तुम्हारे लेंस से ही देखा मैंने। वो सुहाने सफर और यात्राएं रही हों या शांत रास्तों का सफर सब तुम्हारे साथ ही हुए। मुझे याद है जिस दिन बिटिया रानी इस धरती पर आई थीं ,उस दिन तुमने ही खुशी के मारे सबको सूचना दी थी । तुम्हारा उत्साह देखने लायक था उस दिन। कई बार जब मुसीबत में फंसा,तुमने ही लोगों को मदद के लिए गुहार लगाई और मुझे सुरक्षित निकाला। और आज तुम अचानक साथ छोड़ गए - एक बार भी नही सोचा , कोई बात तक नहीं की, मुझे तुम्हारे साथ के लिए शुक्रिया दोस्त बोलने का वक्त भी नही दिया । एक बार भी नही सोचा कैसे इस गतिशील जीवन में मुझे यूं बिना फेसबुक और व्हाट्सएप के बिना अकेला कर गए । जरा सी बारिश ही तो थी मुझे अंदाजा भी नहीं था की तुमको इतनी ठंड लग जाएगी और तुम सीवियर निमोनिया से पीड़ित होकर दम तोड दोगे। ये सच है कि तुम चले गए हो -उससे जीवन रुकेगा नहीं। कोई और आएगा और इस गतिशील जीवन में अपना योगदान देगा। लेकिन तुम तुम ही थे । तुम्हारे साथ बीते क्षण सदा सर्वदा मेरी स्मृति में रहेंगे। लेकिन अब और बड़ा प्रश्न यह है कि तुम्हारे संस्कार कैसे किए जाएं , तेरहवीं में पंडित बुलाए जाएं या तुम्हारी फास्ट डायल लिस्ट में टॉप पर सेव्ड 13 लोगों के नाम वाले सज्जन?? पद में

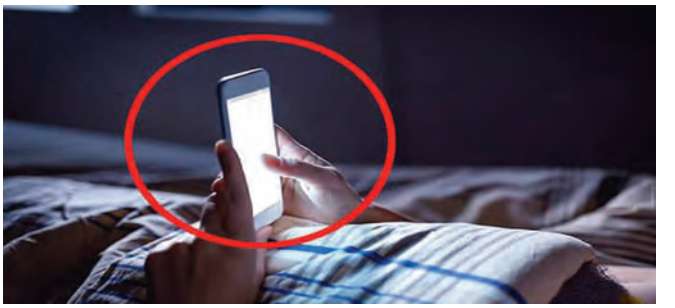

क्या दिया जाए?? बड़ी बात यह की बरसी भी साथ ही निपटा दी जाए या साल भर थाली निकाली जाए ?? बस यही सब सोच रहा हूं कि तुमको इस नश्वर स्वार्थी दुनिया की सभी रीति रिवाजों के साथ विदा करूं या शांति हवन करके ही मुक्ति पालूं।।

तुम्हारे साथ छोड़ जाने पर साहिर लुधियानवी साहब की दो पंक्तियां याद आ रही हैं ------

वो भी इक पल का क़िस्सा थे मैं भी इक पल का क़िस्सा हूँ,
कल तुम से जुदा हो जाऊँगा, गो आज तुम्हारा हिस्सा हूं।।

बर्षा ऋतु

- **अंजु प्रवीण चतुर्वेदी,** वाराणसी

वर्षा की ऋतु आई
अमराई झूमउठी
पपीहा की कूक सुन
बिरहिन जिय हुक उठी
स्याह घटा डरपावे
साजन की सूरतिया
नैनन में तैर जावे
कैसे काटू रतिया
बसे है दूर मनबसिया
बरखा ने छीनी चैन
गरजें घन, चमके बिजुरी
सूनी सेज,व्याकुल मन
भाए न ये सावन
मत बरसों कारे बदरा
अब ये पीर सही न जाय
बिरहिन मन क्यो सताय।

संविधान संशोधन की रिपोर्ट

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के संविधान में संशोधन हेतु एक समिति का गठन किया गया था।

समिति में पूर्व सभापति डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी, दिल्ली

वर्तमान सभापति श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी, भोपाल

श्री मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, नोएडा (पूर्व सचिव)

श्री शशांक चतुर्वेदी, भोपाल (तत्कालीन संपादक, चतुर्वेदी चंद्रिका) सम्मिलित थे। समिति ने 20 मई तक समाज से संशोधन हेतु सुझाव मांगे थे। निम्नलिखित आदरणीय बॉधवों के संशोधन प्राप्त हुए। जिन बांधवों के संशोधन हेतु सुझाव प्राप्त हुए उनका हार्दिक धन्यवाद। सभी सुझावों पर समिति द्वारा विचार विमर्श करने के पश्चात निम्नलिखित संशोधन का प्रस्ताव पारित किया गया। जो सभा के सामने प्रस्तुत है।

1- श्री अजय तिवारी अध्यक्ष ग्वालियर शाखा सभा।

2 श्री अजय चौबे, भोपाल

3 श्री हरेश चतुर्वेदी अध्यक्ष प्राचीन श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा आगरा।

4 श्री यदुवेश चतुर्वेदी, लखनऊ

5 श्रीमती पूनम चतुर्वेदी होलीपुरा

6 श्री दिलीप सिकंदरपुरिया लखनऊ

7 श्री संजय मिश्रा कानपुर

8 श्री मुकेश चतुर्वेदी अध्यक्ष माथुर चतुर्वेदी शाखा आगरा

- मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, कार्यवाहक महामंत्री

जिंदगी

- संगीता चतुर्वेदी, वाराणसी

जो पीछे मुड़ के देखा तो,
कुछ यादें बुला रही थी।
अब तक के सफर की,
सारी बातें बता रही थी।।

कितनी मुश्किल राहें थीं,
हम क्या क्या कर गए।
एक सुकून की तलाश में,
कहां कहां से गुजर गए।।

कितने लोग मिले सफर में,
कितने बिछड़ गए।
जन्मों का साथ निभाने वाले,
जाने किधर गए।।

हर उम्र के सपने अलग थे,
दृष्टिकोण अलग था।
मकसद अलग था,
मोल अलग था।।

आईने में खुद को देख कर,
रोज सोचता रहता हूँ।
क्या खोया क्या पाया,
अक्सर तोलता रहता हूँ।।

उम्र के साथ- साथ।
सोच बदलती रहती है।
चाहत बदलती रहती है,
खोज बदलती रहती है।।
अब इस मुकाम पर,
एक ठहराव आ गया है।
मंज़लि का तो पता नहीं,
पर पड़ाव आ गया है।।

बेचैन मन को राहत
अब मिलने लगी है।
समझौता कर लिया तो,
ज़न्दिगी मुकम्मल लगती है।।

ऐ किस्मत तेरा धन्यवाद,
तुझसे कोई शिकवा नहीं है।
यहां सब थोड़े अधूरे से हैं,
किसी को पूरा मिला नहीं है।।

बहोत सारी कट गई,
अब थोड़ी सी बची है।
बस यही ज़न्दिगी है।

डिजिटल अरेस्ट

- मंजुल चतुर्वेदी, लखनऊ

डिजिटल अरेस्ट अर्थात साइबर ठग के जाल में फंसकर अपराधबोध से ग्रसित होकर अपने को अपने ही घर में कई घंटे या दिन तक कैद कर लेना।। साइबर ठगी या डिजिटल अरेस्ट के केस आने वाली फोन काल की शुरुआत +91.से नहीं होती, इनकी काल वीपीएन (वर्चुअल प्राईवेट नेटवर्क) से होती है,जिसका सर्वर विदेश में होता है।।

जयपुर में एक महिला बैंक मैनेजर को फोन करने वाला स्वयं को दूरसंचार नियामक प्राधिकारण का अधिकारी बताते हुए कहता है कि आपके आधार कार्ड पर महाराष्ट्र में इश्यू सिम कार्ड का कई अवैध कार्यों में इस्तेमाल हो रहा है। महिला मैनेजर जब खंडन करती हैं तो काल ट्रांसफर करते हुए कहता है कि मुंबई पुलिस आफिसर से बात कर लें, जिस पर महिला इतनी डर गई कि जालसाज जो जो कहते गए,वह करती गई, खुद अपने घर में पांच घंटे तक कैद में रही, रिजर्व बैंक से वैरिफिकेशन के नाम पर महिला बैंक मैनेजर के खाते से बीस लाख रुपए ट्रांसफर करा लिए गए।

इसी तरह दिल्ली में एक रिटायर्ड महिला से डिजिटल अरेस्ट करके लाखों रुपए ट्रांसफर करा लिए गए।

नोएडा में भी एक वृद्ध महिला को कूरियर कं० का कर्मचारी बताते हुए कहा कि आपके नाम कूरियर पैकेट में कुछ संदिग्ध वस्तुएं हैं, उन्हें स्काइप साफ्टवेयर से मुंबई नारकोटिक्स ब्यूरो प्रमुख से बात करने को कहा गया, महिला हक्की-बक्की रह गई, दूसरी तरफ पुलिस आफिस जैसा सेटअप देखकर महिला ने अपना होशोहवास खो दिया। महिला को केस क्लियर करवाने के बहाने पांच दिन तक उनके ही घर में कैद कर दिया गया और उनके एकाउंट से लगभग एक करोड़ तीस लाख रुपए ट्रांसफर करा लिया गया।

साइबर ठग डार्क बेब से ऐसे लोगों के नम्बर ले लेते हैं,जिनका प्रोफाइल पैसे ठगने के मकसद से ठीक लगता है।

साइबर पुलिस एक्सपर्ट के अनुसार प्रायः ठग अपने को कूरियर कं० का कर्मचारी बताते हुए कि आपके पैकेट में संदिग्ध वस्तुएं मिली है,जिसकी एफआईआर दर्ज कराई गई है, फिर दूसरे जालसाज से बात करवा दी जाती है जो अपने को परिस्थितियों के अनुसार अपने को पुलिस, सीबीआई,ईडी जैसी सरकारी एजेंसियों का अधिकारी बताते हैं, जो ऐसी-ऐसी कहानी गढ़ते हैं कि फोन सुनने वाला खुद पर नहीं बल्कि उन पर विश्वास करने लगता है, फोन रिसीव करने वाले को बताया जाता है कि वह अवैध गतिविधियों में शामिल पाया गया है। इसके बाद वह अपराधबोध से ग्रस्त होकर डर के मारे जैसा ठग कहते हैं वैसा करता जाता है,तब तक कांल पर बने रहते हुए डिजिटल अरेस्ट रखते हैं,जब तक उनकी मांग पूरी नहीं हो जाती है। ऐसे झूठे कानूनी मामलों

को दबाने के नाम पर मोटी वसूली की जा रही है।

डिजिटल अरेस्ट के बढ़ते केस साइबर पुलिस के लिए कठिन चुनौती बन गए हैं, भारत सरकार ने इस तरह के मामले रोकने के लिए माइक्रोसॉफ्ट के सहयोग से एक हजार से अधिक स्काइप खातो को ब्लॉक कर दिया है। डिजिटल अरेस्ट के मामलों का संचालन विदेशी अपराधिओं द्वारा किया जाता है, इसमें बैंकर्स की मिली भगत की भी आंशका है।

डिजिटल अरेस्ट के पीड़ित अभी तक पढ़ें लिखे एवं पैसे वाले ही है।। +91 के बजाय दूसरे अंको से शुरू होने वाले नंबर से कांल आएं या ऐसी संदिग्ध काल आने पर नेशनल साइबर क्राइम पोर्टल पर जानकारी दे एवं हेल्पलाइन नंबर 1930 की भी मदद ले।।

लेकिन सतर्कता एवं निगरानी ही बचाव है।।

हिन्दी दिवस (14 सितम्बर) के अवसर पर

हिन्दी और उसकी क्षेत्रीय बोलियाँ

- **शिवदत्त चतुर्वेदी**, हतकात/इटावा

इतिहास संस्कृति तथा साहित्य की सत्ता उनके अपने अपने क्रमिक विकास पर ही आधारित्र होती है। उनके वर्तमान स्वरूप में उनके पूर्व रूप का विकास होना चाहिए, विनाश नहीं। उनके अतीत, वर्तमान तथा भविष्य के रूप एक-दूसरे के पूरक होकर सम्बन्ध हों, असम्बन्ध नहीं। क्या ऐसा होना उन्नति या विकास कहा जाएगा, जिससे इस बात की संभावना पैदा हो कि हमारी भावी संतान किसी दिन महाराज हरिश्चंद्र, दिलीप, अशोक, विक्रमादित्य या हर्ष को अपने ऐतिहासिक पुरुष, कर्मफल और पुनर्जन्म के सिद्धान्त, गो सेवा, पातिव्रत तथा अतिथि-सत्कार को अपनी संस्कृति के ऐग एवं चन्दवरदाई, विद्यापति, सूर, तुलसी, मीरा, रसखान, रहीम, केशव, बिहारी, देव, पद्माकर और घाघ को अपनी भाषा के कवि कहने और समझने में भी कठिनाई का अनुभव करें? खेद है कि साहित्य के क्षेत्र में तो वह दिन निकट आता प्रतीत होने लगा है जब हम ब्रजभाषा, बुन्देली, अवधी और भोजपूरी आदि में रचना करने वाले उन सुयोग्य कवियों को भी न समझ पाएंगे, जिनके साहित्य द्वारा हमारी संस्कृति और इतिहास के तथ्य मानव-जीवन की विविध अनुभूतियों और समस्त आदर्शों के साथ जन-जन के जीवन में घुलमिल गये हैं और जिनका काव्य आज हिन्दी का प्रतिनिधि बनकर विश्व साहित्य के समक्ष बड़े गर्व और गौरव के साथ रखा जाता है।

कारण स्पष्ट है, खड़ी बोली वाला रूप ही हिन्दी मान लिया गया है और वीरगाथा, भक्ति तथा रीतिकालिन साहित्य सर्वांशतः हिन्दी के जिन रूपों में लिखा गया है, वे क्षेत्रीय भाषाएँ समझी जाने लगी हैं। प्रथम दौड़ में अन्य सभी पीछे छूटती ज रहीं हैं। खड़ी बोली की आशातीत उन्नति सर्वतोन्मुखी समृद्धि निसन्देह हमारे सौभाग्य की सूचक है। परंतु 'समग्र' पर दृष्टिपात करते ही हमारा माथा उनके बिना नहीं रहता और हमें चिन्ता होने लगती है कि जिस साहित्य में, उसकी वास्तविक उन्नति या प्रगति के हेतु उसके 'पूर्व रूप का विकास' होना अनिवार्य है वहाँ 'विकास' के स्थान पर उपेक्षा की जा रही है और हम आँख बन्द किये साहित्य को उसके सभी अंगों के 'क्रमिक विकास' वाले मार्ग से दूर लिये जा रहे हैं, जहाँ पहुँच कर वह अपनी यथार्थता खोये बिना न रहेगा।

भारत-भारती-भागीरथी के इस विपुल प्रवाह का बहुत कुछ श्रेय उसकी सहायक नदियों, इन क्षेत्रीय बोलियों को ही है। यह जानकारी भी उनके महत्व और उनकी निरन्तरता को कायम रखने के लिए हम क्या कर रहे हैं ? समय चाहे जितना बदले, भारतीय हृदयों में जिन भावनाओं का बहिष्कार काभी भी नहीं हो सकता उनकी प्रेरणाओं का अमर श्रोत ये उपभाषाएं हैं, यह बात प्रत्येक साहित्यसेवी के माँ से काभी न उतरना चाहिए। ब्रज, बुन्देली, अवधी, भोजपूरी आदि उसकी क्षेत्रीय भाषाएं खड़ी बोली की ही भांति हिन्दी के शरीर की शिराएं हैं और उनका समवेत साहित्य उसका प्राण-वायु है, जिसके बिना उसका कोमल कान्त और कमनीय कलेवर कालान्तर में निर्जीव स हो जाएगा इसमें संदेह नहीं। शरीर के सभी अंगोपांगों के साथ साथ समुचित विकास पर ध्यान ण देकर अंग विशेष पर ही समस्त शक्ति केंद्रित कर विकसित करने की चेष्टा अंततोगत्वा रोग की ओर ले जाति है, स्वास्थ्य की ओर नहीं। केवल खड़ी बोली और उसकी सन्तति गद्य को ही 'सर्वस्व' समझ हमारे साहित्यकार क्षेत्रीय भाषाओं की उपेक्षा करते हुए चलते रहे तो वे 'पेड़ काटि तकें पल्लव सींचा' वाली उक्ति भले ही चरितार्थ न करें, परन्तु वे अपने को उस माली के समान सिद्ध तो कर ही देंगे; जिसने गुलाब की नयी पौध के पोषण-परिवर्धन करते रहने की धुन में अन्य द्रुम लताओं को न सींचकर उद्यान की संज्ञा ही बदल दी। "एक क्यारी सींची शेष उपवन सुखा दिया।" अस्तु निष्पक्ष भाव से यदि गम्भीरतापूर्वक सोचें तो हम अनुभव करेंगे कि हिन्दी के अत्यंत महत्वपूर्ण अंगों, क्षेत्रीय बोलियों के प्रति उदासीनता या उपेक्षा की नीति किसी दिन घातक सिद्ध होगी। उन्हे साथ लेकर न चलने से एक तो वे स्वयं पनप न सकेंगी दूसरे उनके व्यापक रूप में पठन-पाठन के रुक जाने पर हिन्दी हमारी सहस्राब्दियों पुरानी सभ्यता, संस्कृति, धर्म, समाज-व्यवस्था तथा राजनीति की सतरंगी झलक न रहेगी,

जिससे विहीन उस साहित्य को हम अपना सच्चा प्रतिनिधि करने की स्थिति में न रहेंगे। उस भयावह स्थिति और अपने प्रतिनिधित्व से रहित उस साहित्य की कल्पना मात्र हमारे लिए रोमांचकारी है।

विगत वर्षों में क्षेत्रीय बोलियों की जो उपेक्षा हुई है उसका परिणाम यह है कि आज का क्षात्र इनकी मधुरतम रचनाओं का यथेष्ट रसास्वादन कर सकने में असमर्थ है। इसका कारण यह भी है कि उसे inके साहित्य के दर्शन अपनी पाठ्य पुस्तकों के कतिपय पृष्ठों के अतिरिक्त कहीं अन्यत्र होते ही नहीं। अपनी कक्षाओं के बाहर हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के पढ़ने से भी जो तद्विषयक सहायक योग्यता आनी चाहिए वह भी इस लिए आ पाती कि वहाँ भी इन उपेक्षित जनपदीय भाषाओं की पूछ नहीं। विगत पीढ़ियों के लोग विधिवत अध्ययन किए बिना भी अपने पुराने कवियों की रचनाएं जिस सरलता और स्पष्टता से समझ लेते हैं, उस प्रकार आज का नवयुवक नहीं समझ पाता है। दुख और आश्चर्य होता है जब उच्च कक्षा के छात्र ब्रज या अवधी की उत्कृष्टतम रचना की अनुभूति और समझ के साथ नहीं पढ़ पाते। इसमे प्राध्यापक का भी दोष नहीं। इसके लिए निश्चय ही उत्तरदायी हैं वे लोग जिन्हे यह नहीं सूझा कि जिन कवियों की कृतियों को हमें विश्वविध्यालयो की उच्चातिउच्च कक्षाओं में पढ़वाना है उनके दर्शन छात्रों को उन कक्षाओं में आने के पूर्व कभी होते भी हैं या नहीं। हमारी क्षेत्रीय भाषाएँ राजस्थानी साहित्य पर सदैव गर्व करती रहें हैं परंतु उसकी कोई रचना हिन्दी की प्रारम्भिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में कभी नहीं रहती। तब यकायक आगे चलकर एम.ए. में चन्दवरदाई को कैसे समझा जाय ? "बेलि क्रिसन .. रुकमिनी री" जैसी मधुर एवं अमर रचना के कवि का नाम भी क्या माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थी बता सकते हैं ? मैथिल कोकिल विद्यापति की –

" सरस बसन्त समय भलि पावल दछिन पवन बहि धीरे।
सपनेहु रूप वचन इक भाखिय मुख तें दूर करु चीरे।
तोहर बदन सम चंद होअय नहिं कैयो जतन वह केला।
पुनि पुनि काटि बनावल नव कै तैयो तुलित नहिं भेला।
लोचन तूअ, कमल सक भे नहिं, से ज के नहिं जाने।
से पुनि जाय लुकैलंह जाल भयें पकंज निज अपमाने।"

(हे प्रेयसी, बसन्त का समय है, मलयानिल बह रहा है, घूंघट खोलकर एक वचन बोल दे, तेरे मुख के समान बनने की चेष्टा चंद्र निरंतर करता रहता है, बार बार अपने को तेरे मुख जैसा बनाता है, पूर्णिमा को मिलन करता है जब वैसा नहीं हो पाता तो मिटाकर फिर बनाता है तो भी तुल्य न हो पाया। कमलों ने तेरे लोचनों सा होना चाहा, न होने पर अपमान के मारे पानी में जाकर छिप गये – चुल्लू भर पानी में डूब गये !!)

इन रसीली पंक्तियों को पढ़कर पढ़ने वाला क्या मन मसोसकर रह जाता होगा, कि ऐसे कवि के अध्ययन का अवसर उसे इससे

पहले क्यों न दिया गया ? माध्यमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में यदाकदा और सो भी एक आध स्वीकृत पाठ्य पुस्तक में उनको स्थान मिल जाता है। नहीं तो सीधे विश्वविध्यालय में ही उनसे मुलाकात होती है सो भी परीक्षा भर के लिए !!

ऐसी दमित एन क्षेत्रीय बोलियों के उत्तरोत्तर विकास करते रहने की गुंजाइश कहाँ है ? प्रकाशक आज उन्ही पुस्तकों को लेते है, जो पाठ्यक्रम से सम्बन्धित होने के कारण पर्याप्त संख्या में बिक सकें। मासिक, साप्ताहिक अथवा दैनिक पत्र – पत्रिकाओं में भी कहीं ऐसी प्रवृत्ति नहीं पायी जाई, जो उनके साहित्य – संवर्द्धन के लिए अनुकूल हो। पठन –पाठन और प्रचार दोनों के लिए दरवाजे खुले न होने पर भी, ब्रजभाषा,बुन्देली, भोजपुरी और अवधी आदि अपने–अपने क्षेत्र में आज भी अपने जीवंत रूप में होने की घोषणा कर रही हैं, यह उनकी अक्षय आंतरिक इतिहास परिणाम और पुष्ट प्रमाण है। किन्तु भाषाओ को उनकी आंतरिक शक्ति पर अपनी जिंदगी जीने और अपनी मौत मरने के लिए छोड़ देना जीवित जाति के लिए आत्महत्या करने के समान है। जिस उत्कृष्ट घड़ी में चौबीस घंटे बाद चाभी लगाना आवश्यक हो वह काभी – काभी भूल से यथासमय चाभी न लगाने पर भी थोड़ी देर चलती रहती है, परंतु कितने समय तक ?

समस्त साहित्यकारों का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट करने के साथ –साथ इन जनपदीय –कवियों और उनके उन्नायकों से भी निवेदन किये बिना न रहेंगे कि वे नयी विचारधारा को अपनाते हुए अपनी कृतियों के स्तर को खड़ी बोली के समकक्ष लाकर उसके बराबर बनाये रखने का प्रयत्न निरन्तर करते रहें। उनके काव्य-निधि की संरक्षा का भार समस्त साहित्यिक समाज पर है और उन्हे समान अवसर दिलाने का कर्तव्य भी अभी सम्बन्धित व्यक्तियों तथा वर्गों का है, परन्तु हिन्दी-साहित्य की प्रगति में समयानुकूल उचित योग देने की जिम्मेवारी तो जनपदीय लेखकों तथा कवियों पर है। हिन्दी साहित्याकाश में खड़ी बोली यदि नवोदित सूर्य के समान है तो क्षेत्रीय भाषाएं चन्द्र तथा नक्षत्रों को भी अपनी चमक-दमक दिखने का मौका मिलन चाहिए। कहीं वे फीके न पड़ जायें। किसी उर्दू कवि के शब्दों में –

'चाँद तारों, तुम अगर शरमाओगे,
वक्त से पहले सहर हो जाएगी

आपके शरीर अंग, करते सावधान

- रजत चतुर्वेदी, कोलकाता

1. **पेट (Stomach)** उस वक्त डरा होता है जब आप सुबह का नाश्ता नहीं करते।
2. **गुर्दे (Kidney)** उस वक्त खौफ में होते हैं जब आप प्यास लगने पर पानी नहीं पीते।
3. **पित्ताशय (Gallbladder)** उस वक्त परेशान होता है जब आप रात 11:00 बजे तक सोते नहीं और सूरज उगने से पहले जागते नहीं हैं।
4. **छोटी आंत (Small Intestine)** उस वक्त तकलीफ महसूस करती है जब आप ठंडी चीजें पीते हैं और बासी खाना खाते हैं।
5. **बड़ी आंत (Large Intestine)** में उस वक्त ज्यादा तकलीफ होती है जब आप तली हुई या मसालेदार चीजें खाते हैं।
6. **फेफड़े (Lungs)** उस वक्त बहुत तकलीफ महसूस करते हैं जब आप धुआं धूल सिगरेट बीड़ी से भरपूर हवा में सांस लेते हैं।
7. **यकृत (Liver)** उस वक्त बीमार होता है जब आप बहुत तली हुई खुराक और फास्ट फूड खाते हैं।
8. **दिल (Heart)** उस वक्त बहुत गमगीन होता है जब आप ज्यादा नमकीन और कोलेस्ट्रोल वाली तळी चीजें खाते हैं।
9. **अग्न्याशय (Pancreas)** उस वक्त बहुत डरता है जब आप बहुत ज्यादा मिठाई खाते हैं और खासकर जब वह फ्री में मिल रहीं हों।
10. **आंखें (Eyes)** उस वक्त तंग आ जाती हैं जब आप अंधेरे में मोबाइल और कंप्यूटर पर उनकी तेज रोशनी में काम करते हैं।
11. **दिमाग (Brain)** उस वक्त बहुत दुःखी होता है जब आप नेगेटिव सोचते हैं।

स्वस्थ रहे,मस्त रहें

हिन्दी दिवस (14 दिसम्बर) पर
हिन्दी वंदना

- डॉ0 कुश चतुर्वेदी, (इटावा)

आओ हिन्दी के गुण गायें ।
आओ हिन्दी अपनायें । ।
निज भाषा पर बलि बलि जायें ।
वंदन कर मन से अपनायें ।
आओ हिन्दी के गुण गायें । ।

ये तुलसी का प्यारा आँगन ।
ये सूर का न्यारा सावन !
पावन धरती है केशव की
ये धनानंद का आराधन । ।

भारतेन्दु का सपना है ये
सबको सुख देकर सुख पायें । । ।

हिन्दी सबकी प्यारी भाषा
हिन्दी बापू की अभिलाषा । ।
हिन्दी आशा जन गण मन की
हिन्दी जीवन की परिभाषा । ।

चलो राष्ट्र भाषा अपनाकर
हिन्दी का सम्मान बढ़ायें । ।

लेखन हेतु सरलतम भाषा
पाठन हित निर्मलतम भाषा । ।

उच्चारण अति सहज शुद्धतम
अध्ययन हेतु विमलतम भाषा । ।

हम ऐसी अनुपम भाषा का
वंदन कर मन से अपनायें ।
आओ हिन्दी अपनायें ।।

नीड़ का बिरवा

- **श्रीमती बीना चतुर्वेदी**, जयपुर

कॉलेज में व्याख्याता के पद पर कार्यरत प्रबोधिनी बहुत ही समझदार और सुलझे विचारों वाली महिला थी। पति आमोद विश्वविद्यालय में केमिस्ट्री के प्रोफेसर थे। आमोद के शोधकार्य और विशिष्ट योग्यता को देखते हुए ऑस्ट्रेलिया के एक विश्वविद्यालय ने अपने यहाँ के छात्रों को लाभान्वित करने हेतु एक वर्ष के लिये उन्हें आमंत्रित किया था।

प्रबोधिनी का छोटा-सा परिवार था। इनके अविनाश और अदिति दो बच्चे थे। अविनाश एम.बी.ए. करने के लिये दूसरे शहर में हॉस्टल में रह कर पढ़ाई कर रहा था जबकि आदिति प्रबोधिनी के कॉलेज में ही बी.ए. ऑनर्स अंग्रेजी विषय में कर रही थी। प्रबोधिनी की मान्यता थी कि बच्चे अपनी माँ की सुघड़ता और फूहड़ता का जीता जागता प्रमाण होते हैं। वह इस सम्बन्ध में प्रारम्भ से ही बहुत सतर्क और सजग थी। उसने अपने दोनों बच्चों के व्यक्तित्व को बड़े सलीके से संवारा था। यही वजह थी कि लोग प्रबोधिनी की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते थे। जब भी कोई प्रबोधिनी के समक्ष उसकी प्रशंसा करता था तब वह बड़े ही सहज ढंग से कहती थी कि मैंने कोई विशिष्ट कार्य नहीं किया है। सभी माँएँ अपनी क्षमता और लगन के अनुसार अपने बच्चों की परवरिश करती हैं।

आमोद एक वर्ष के लम्बे समय के लिये परिवार को छोड़कर एक अनजान देश में जाने का निर्णय नहीं ले पा रहे थे। उन्हें इस बात की चिन्ता सताये जा रही थी कि मेरे जाने के बाद प्रबोधिनी और अदिति अकेली पड़ जायेंगी। प्रबोधिनी के ससुराल और मायके के लोग भी नजदीक में नहीं रहते थे। प्रबोधिनी ने आमोद को पूर्णरूपेण आश्वस्त करके जाने के लिये प्रेरित किया था। आमोद कहने लगे थे कि प्रबोधिनी अकेले में तुम सब कुछ कैसे संभाल सकोगी ?

प्रबोधिनी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया था कि आप ऐसा क्यों सोच रहे हैं? क्या आपको मुझ पर विश्वास नहीं है?

आमोद चिन्तित होकर कहने लगे थे कि प्रबोधिनी ऐसी बात नहीं है। मुझे तुम पर पूरा भरोसा है। तुम हमेशा से अपने घर-परिवार के लिये पूर्णतः समर्पित रही हो। तुम बहुत बुद्धिमान, कर्मठ, समझदार होने के साथ ही एक सफल शिक्षिका के साथ और भी बहुत कुछ हो। फिर भी न जाने क्यों?

प्रबोधिनी ने आमोद को प्रोत्साहित करते हुए कहा था कि आप व्यर्थ ही चिन्तित हो रहे हैं। इतना अच्छा अवसर आपको स्वतः ही मिला है। बार-बार ऐसे अवसर नहीं मिलते। आपको जाना चाहिये।

आमोद भावुक होकर कहने लगे कि प्रबोधिनी तुम तो जानती हो कि मेरे परिवार के लोग मेरी कमजोरी है। विदेश में एक वर्ष तक तुम लोगों के बिना अकेले रहना मेरे लिये एक बहुत बड़ी सजा जैसा होगा।

आमोद की बात सुन कर प्रबोधिनी भी यह सोच कर कि वह एक वर्ष तक पति के बिना कैसे रह सकेगी। विचलित होने लगी थी। मगर अगले ही क्षण अपने आप पर काबू करते हुए सोचने लगी कि यदि मैं ही कमजोर पड़ गई तब ये कतई नहीं जा सकेंगे। प्रबोधिनी ने मुस्कराते हुए बड़े ही उत्साह के साथ आमोद के हाथों को अपने हाथों में लेते हुए कहा, अरे आप व्यर्थ ही परेशान हो रहे हैं। एक वर्ष का समय होता ही कितना सा है। कार्य की व्यस्तता में आपको पता भी नहीं चलेगा। फिर यह भी तो सोचिये कि जिन्दगी का यह एक वर्ष आपको नये आयाम देकर जायेगा। नौकरी में कितनी तरक्की आपको मिल सकेगी। कुछ पाने के लिये कुछ खोना तो पड़ता ही है।

इतने पर भी आमोद को सन्तुष्टि नहीं मिल रही थी। उनका कहना था कि मेरे हिसाब से यह कीमत मुझे कुछ अधिक ही लग रही है।

अन्ततः काफी विचार-विमर्श के बाद आमोद जाने के लिये तैयार हो गये थे। आमोद के चले जाने के पश्चात घर में अजीब-सा सूनापन छा गया था। माँ-बेटी दोनों जब शाम को कॉलेज से वापस आती तब घर में निःशब्दता छायी रहती। जब आमोद थे तब इनका घर शाम के समय ठहाकों से गूंजता रहता था। अब शामें बहुत ही सूनी हो गई थी। अब तो यदा-कदा अदिति की कोई सहेलियाँ आ जाती तभी उनकी खिलखिलाहट से घर की उदासी कुछ समय के लिये मिट जाती थी। अवकाश के दिन कभी-कभी प्रबोधिनी की सहयोगी शिक्षिकाएँ भी आ जाती थीं, तब समय अच्छा व्यतीत हो जाता था।

प्रबोधिनी को अपने कॉलेज की एक सहयोगी प्राध्यापिका रंजना से घनिष्ठ मित्रता थी। इन दोनों की विचारधारा में बहुत समानता थी। ये दोनों अपने सुख- दुःख की बातें और समस्याओं का समाधान आपस में करती रहती थी। रंजना के पति का स्वयं का कारोबार था। इनके दो बेटे थे वरदान और अभिजीत । बड़ा

बेटा वरदान पायलट बन गया था। छोटा बेटा प्रबोधिनी के बेटे के साथ ही एम.बी.ए. कर रहा था। अभिजीत का विचार अपने पिता के कारोबार में साथ में काम करने का था। इन दोनों का इस वर्ष कोर्स पूरा होने वाला था। प्रबोधिनी हर समय बेटे के आने के दिन महीने गिनती रहती थी। वह सोचती कि जब अविनाश आ जायेगा तब घर में रौनक हो जायेगी। कहते हैं कि उम्र के इस पड़ाव में जीवनसाथी की कमी कुछ अधिक ही महसूस होती है। रात के समय माँ-बेटी को आमोद के फोन का इन्तजार रहता था।

एक शाम अचानक से प्रबोधिनी रसोई में टकरा कर गिर पड़ी थी। उसे लग रहा था मानो उसके पैर की हड्डी टूट गई थी। अदिति ने प्रबोधिनी की सहेली रंजना की फोन करके बताया। वह तुरन्त ही अपने ड्राइवर के साथ गाड़ी से प्रबोधिनी के घर आ गई थी। रंजना ने सहारा देकर प्रबोधिनी को गाड़ी में बैठाया और अस्पताल ले गई थी। एक्सरे में आया कि प्रबोधिनी की पैर की बड्डी कई जगह से क्रंक हो गई थी। प्लास्टर चढ़वा कर रंजना उसे घर लेकर आई थी। अब प्रबोधिनी को एक महीने तक बिस्तर की शरण में रहना था।

रंजना ने अपने घर पर खाना बनाने वाली महाराजिन को प्रबोधिनी के घर खाना बनाने के लिये भेज दिया था। घर के अन्य कार्य करने के लिये प्रबोधिनी के घर काम वाली आती थी। रसोई में खाना बनाने का कार्य प्रबोधिनी स्वयं करती थी।

अस्पताल से वापस आते समय गाड़ी में रंजना प्रबोधिनी से कहने लगी थी कि प्रबोधिनी तू अपनी बेटी अदिति को मुझे दे दे, वरदान के लिये। तुझे लड़के की तलाश नहीं करनी पड़ेगी और मुझे घर बैठे ही सुघड़ बहू मिल जायेगी।

प्रबोधिनी मुस्कराते हुए रंजना से पूछने लगी कि तू जो कुछ कह रही है उस पर भली-भाँति तूने विचार कर लिया है न। यदि अदिति के व्यवहार से तुझे कोई परेशानी होगी तब तू मुझसे बाद में मत कहना कि मैंने तुझे बताया नहीं था।

रंजना ने बड़ी फुर्ती से उत्तर देते हुए कहा था कि शादी के बाद अदिति मेरी हो जायेगी तब तेरी जिम्मेदारी कहाँ रहेगी। फिर तुझे चिन्ता करने को आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

इस तरह से बातें करते हुए दोनों सहेलियाँ खिलखिलाकर हँसने लगी थी।

प्रबोधिनी मन ही मन सोच रही थी कि क्या अदिति को रंजना के बंगले को विलासितापूर्ण जिन्दगी मिल जायेगी? यूँ तो आमोद और प्रबोधिनी दोनों हो प्रतिष्ठापूर्ण नौकरियाँ करते थे मगर अभी तक अपना घर नहीं बनवा पाये थे। वो किराये के घर में ही रहते थे। आमोद अपने माता-पिता की सबसे बड़ी सन्तान थे। उनसे छोटे पाँच भाई-बहनों की परवरिश और शादी-विवाह आदि की सभी जिम्मेदारियाँ इन दोनों ने ही निभाई थी। इनके माता-पिता का देहान्त एक एक्सीडेन्ट में आमोद और प्रबोधिनी की शादी के दो महीने बाद हो गया था।

एक महीने पश्चात रंजना प्रबोधिनी के पैर का प्लास्टर कटवाने के लिये अपनी गाड़ी से उसे अस्पताल लेकर गई थी। जब वह प्रबोधिनी को वापस घर छोड़ने आई तब प्रबोधिनी ने रंजना से कहा कि इस रविवार की छुट्टी के दिन वह उसके घर पर डिनर करने आये। भाई साहब और बच्चे भी मेरे घर खाना खाने आयेंगे। तब मुझे बहुत अच्छा लगेगा, साथ ही बच्चे भी आपस में मिल लेंगे। रंजना ने सहर्ष स्वीकार कर लिया था।

रंजना की महाराजिन शाम होने से पूर्व प्रबोधिनी के घर आकर रसोई के कामों में लग गई थी। प्रबोधिनी भी उसकी सहायता कर रही थी। अदिति पूछने लगी, माँ, आज इतनी जल्दी और इतने व्यंजन क्यों बन रहे हैं? रसोई से बहुत अच्छी सुगन्ध आ रही है।

प्रबोधिनी ने बताया कि आज रंजना सपरिवार अपने घर डिनर के लिये आ रही है। तू भी अच्छे से तैयार हो जाना।

शाम को रंजना अपने पति और दोनों बेटों के साथ समय पर प्रबोधिनी के घर आ गई थी। रंजना के साथ-साथ अदिति ने भी बड़ी तत्परता और उत्साह के साथ उन सबका स्वागत किया था। चाय पीने के बाद अदिति वरदान और अभिजीत के साथ बातें करने लगी थी। प्रबोधिनी ने वरदान की ओर देखा और देखती ही रह गई। दुबले पतले, ऊँचे कद वाले, गौर वर्ण वरदान की शक्ल-

सूरत पर शालीन मुस्कराहट थी। अपने पद के अनुसार दम्भ का नामोनिशान नहीं था। वह बहुत ही हैन्डसम लग रहा था। हँसमुख और मिलनसार स्वभाव वाले रंजना के इस बेटे को देख कर प्रबोधिनी सोचने लगी कि इसके साथ मेरी अदिति की जोड़ी बहुत ही सटीक रहेगी। अदिति के मोहक रूप और दक्षता को देखकर वरदान भी उससे प्रभावित हो रहा था।

थोड़े समयोपरान्त अदिति ने बड़ी कुशलता के साथ मेज पर भोजन लगा दिया था। बहुत ही खुशगवार माहौल में सबने भोजन किया। वरदान कहने लगा, आण्टी, आज की यह शाम लम्बे समय तक याद रहेगी। विदा होने तक वरदान की दृष्टि अदिति पर टिकी रही। अदिति भी शर्माती, लजाती और मुस्कराती रही।

चलते समय रंजना ने प्रबोधिनी से कहा कि आज की शाम बहुत सुखद रही। तुमने बताया कि अविनाश बेटा आ रहा है। उसके आ जाने पर अगले रविवार को हमारे घर पर हम सब मिलकर डिनर करेंगे।

प्रबोधिनी ने कहा ठीक है।

अविनाश के आ जाने पर रविवार की शाम प्रबोधिनी अपने दोनों बच्चों के साथ रंजना के घर पहुँच गई थी। अदिति ने आसमानी रंग का कसीदे वाला सूट पहना था। इस सूट में उसका रूप खूब निखर रहा था। कुछ क्षणों तक प्रबोधिनी

अदिति के निर्दोष, अप्रतिम एवं अनुपम रूप को अपलक निहारती रही। अदिति पूछने लगी, माँ, आप कहाँ खो गई? चलिये

न।

रंजना के घर पहुँचते-पहुँचते शाम ढल चुकी थी। इन लोगों ने देखा कि रंजना सपरिवार अपने बंगले के लॉन में बैठी इन लोगों का इन्तजार कर रही थी। इनको देखते ही सब उठ कर खड़े हो गये। प्रबोधिनी ने देखा कि वरदान एकटक अदिति को देखे जा रहा था।

रंजना के पति कहने लगे कि इन लोगों को अन्दर लेकर चलोगी या कि यही इसी तरह खड़ा रखने का इरादा है।

रंजना प्रबोधिनी का हाथ पकड़ कर सबको अन्दर ले गई। वह कहने लगी, प्रबोधिनी, आज मेरी नजर अदिति की अवश्य लग जायेगी। बहुत ही सुन्दर लग रही है?

रंजना के पति ने भी इस बात का समर्थन करते हुए कहा, अदिति बिटिया है ही इतनी प्यारी।

रंजना के पति कहने लगे, डिनर तो कुछ समय बाद ही करेंगे तब तक आधा-आधा कप कॉफी हो जानी चाहिये।

रंजना उठ कर रसोई की ओर जाने लगी, तब अदिति ने कहा, आण्टी, आप बैठिये, मैं बना कर लाती हूँ। अदिति के पीछे-पीछे वरदान यह कहते हुए जाने लगा कि चलो, मैं तुम्हारी मदद कर सकूँगा। दोनों को साथ जाते हुए देखकर रंजना प्रबोधिनी से कहने लगी कि इन दोनों को जरा देखो, दोनों की जोड़ी कितनी अच्छी लग रही है। प्रबोधिनी ने मुस्कराते हुए रंजना का समर्थन किया। रंजना कहने लगी कि हम दोनों को तो अदिति पहले से ही पसन्द थी। अब ऐसा लग रहा है कि वरदान भी अदिति को पसन्द करने लगा है। कल जब मैंने अदिति के सम्बन्ध में वरदान से पूछा था तब वह मुस्कराने लगा था। नौकरी उसकी लग गई है अतः शादी भी मुझे जल्दी ही करनी है। प्रबोधिनी, तुम भाई साहब से आज बात कर लेना। यदि वह सहमत हो तब हम सगाई की छोटी सी रस्म पूरी कर लेते हैं। उनके ऑस्ट्रेलिया से आने के बाद शादी कर लेंगे। अदिति से भी पूछ लेना। आमोद के ऑस्ट्रेलिया से आने के बाद अदिति और वरदान की शादी धूमधाम से सम्पन्न हो गई। अदिति की विदाई की रस्म चल रही थी तब प्रबोधिनी ने अश्रुपूरित आँखों से रंजना से, जो कि आज से उसकी समधन बन गई थी कहा, रंजना, मैं अपने बड़े सुन्दर सुकोमल 'नीड़ के बिरवे' को आज तेरे बंगले में रोपित कर रही हूँ। अब यह तेरे बंगले में ही पुष्पित, पल्लवित और फलित होकर उसकी शोभा बढ़ायेगा। आज से इसकी जिम्मेदारी तुझे सौंप रही हूँ।

संपादक के नाम पत्र

महासभा का पैंतीसवां अधिवेशन समाज के मन मस्तिष्क पर अपनी अनोखी छाप छोड़ चला है,मिलत एक दारुण दुःख देहीं बिछुरत एक प्राण हर लेंहीं तुलसीदास जी ने भी जो मानव की कैटेगरी बताई उस के अनुसार मनुष्य बस दो ही प्रकार के बस, एक वे जिनके मिलते ही दुखों का प्राकट्य हो जाये और एक वे जो अगर बिछुडते प्रतीत हो तो लगे कि यह बिछोह तो प्राणलेवा। बस वही अहसास हुआ जब भोपाल से विदाई का वक्त आ गया,लगा इन दो दिनों में भोपाल समाज ने ऐसा अपनत्व, दिल खोलकर स्वागत वंदन, इस भीषण गर्मी के वातावरण में जैसे चंदन के लेप की तरहां शीतलता का अहसास कराते रहे।

महासभा इस आयोजन को युवाओं के लिए एक मील का पत्थर बनाने में कामयाब रही यह इस अधिवेशन की सबसे बड़ी उपलब्धि भी है युवाओं को रोजगार के लिए कैसे तैयार किया जाय, इसके लिए एक पूरी कार्यशाला स्थापित की गई युवाओं में इस समय जो सबसे बड़ी समस्या आ रही है वह अच्छे कालेज से डिग्री मिलने के बाद भी अपनी इंट्रेन्शिप के लिए परेशान हो रहे हैं, इसके लिए पूरी कार्ययोजना बनाई गई है और उस पर मंथन प्रारंभ हो गया है। इससे पहले महासभा हमने ऐसा नहीं देखा,बस खाय पिये रहो, मस्त रहो, घूम-फिर लेओ यही उद्देश्य थे पर इस बार जो विचार धारा प्रकट हुई, मेजर जनरल अजय जी लखनऊ और संतोष जी के नेतृत्व में परिचर्चा कर उसमें से जो अमृत मंथन हुआ है। उसके सुखद परिणाम हमें बस कुछ एक माह में अवश्य देखने को मिलेंगे ऐसा मेरा अटल विश्वास है।बाकी तो सब ने सब कुछ लिख ही दिया है उसको दोहराने से कोई फायदा भी नहीं है। नये कलेवर में लिपटी महासभा हमारे भविष्य को कैसे संवार रही है यह देखना भी अत्यंत सुखद होगा और हम सब उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं और ईश्वर से प्रार्थना भी यही है समाज को ऐसा ही सशक्त नेतृत्व हमेशा मिलता रहे जिसके सानिध्य में युवा को अपने भविष्य के लिए सुनहरे स्वप्न अब दिवास्वप्न की तरहां प्रतीत नहीं हों बल्कि वह हकीकत बन कर क्षितिज पर अपनी चमक बिखेरने में कामयाब हो क्योंकि किसी ने कहा भी है

सुनहरा था अतीत और भविष्य भी महान है,अगर संभाल लो उसे जो वर्तमान है।अंत में मैं ऊषा दीदी को ऐतिहासिक अध्यक्षा बनने के लिए बहुत बहुत बधाई और समस्त कार्यकारिणी सदस्यों को भी बहुत बहुत बधाई देता हूं।

चुनौतियां कई है पर नई नहीं है। हम उन चुनौतियों पर अवश्य विजय प्राप्त कर लेंगे, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

- सौरभ चतुर्वेदी, फरौली/लखनऊ

गया में पिंडदान क्यों

- गजेन्द्रनाथ चतुर्वेदी (फरौली/लखनऊ)

वैसे तो श्राद्ध कर्म तर्पण करने के लिए भारत में कई स्थान हैं जिनमें कुछ नाम हरिद्वार, गंगासागर, जगन्नाथ पुरी, कुरुक्षेत्र, चित्रकूट, पुष्कर, बद्रीनाथ नैमिष्यरायण और गया। इसमें सबसे ऊपर नाम गया का ही है। पवित्र फल्गु नदी के तट पर बसे प्राचीन नगर गया की देश ही नहीं अपितु विदेशों तक में पितृपक्ष और पिंडदान को लेकर खास पहचान है। पुराणों के अनुसार पितरों को आश्विन मास के कृष्ण पक्ष अर्थात पितृपक्ष में मोक्षधाम गया जी में आकर किया गया तर्पण और पिंडदान से मोक्ष की प्राप्ति होती है और माता-पिता सहित सात पीढ़ियों का उद्धार होता है।गया जी में पहले तीनसौसाठ वेदियां थी जो समय के साथ अब मात्र ४८की संख्या में रह गई है। जिनमें प्रमुख हैं विष्णु पाद मंदिर, फल्गु नदी के तट पर, अक्षय वट, वैतरणी, प्रेतशिला, सीताकुंड,नागकुंड, पांडुशिला, रामशिला, मंगलागौरी और कागबलि।

किंवदंतियों के अनुसार भस्मासुर राक्षस का वंशज गयासुर मात्र नाम से ही असुर था परन्तु उसमें परोपकार की भावना प्रगाढ़ बलवती थी उसने कठिन तप के द्वारा बृह्माजी से यह वरदान प्राप्त कर लिया कि उसकी देह भी देवताओं की भांति पवित्र हो जाय और जो भी प्राणी उसके दर्शन कर लें उसके सारे पाप मुक्त हो जाये। इससे हुआ यह कि धरती पर पाप और अनाचार बढ़ गया और स्वर्ग में भी स्थान कम पड़ने लगा क्योंकि व्यक्ति पाप और अनाचार तो करते पर गयासुर के दर्शन मात्र से उनके सारे पाप कर्म नष्ट हो जाते और वह स्वर्ग चले जाते। फिर देवताओं ने इससे बचने के लिए एक यज्ञ के बहाने से गयासुर से आग्रह किया कि आपकी पवित्र देह पर यज्ञ किया जायेगा गयासुर ने तत्काल अपनी देह देवताओं को अर्पित कर दी गयासुर का शरीर पांच कोस में फैल गया और यही पांच कोस आगे चलकर गया बना।देहदान के बाद भी गयासुर के मन से लोगों को पाप मुक्त करने की इच्छा गई नहीं और उसने देवताओं से आग्रह किया कि कुछ ऐसा हो जिससे यह स्थान ही लोगों का तारन हार बन जाय तब से यह स्थान मृतक के श्राद्ध कर्म और पिंडदान के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया है।।

गया प्रस्थान करने से पहले मुंडन अतिआवश्यक है, गया प्रस्थान हमेशा मूल निवास जहां हमारे पूर्वजों का निधन उनका क्रियाकर्म हुआ हो से करना सर्वोत्तम है। पहले अपने पूर्वजों का आह्वान किया जाता है चलो चलो, हमारे साथ गया चलो।घर का कोना कोना,ताक, अलमारी, स्नानघर, पशुओं का बाड़ा आदि सभी स्थानों पर अपने पूर्वजों की पुकार करी जाती है, फिर गांव के चारों और दूध की धार लगती है। देहरी और खेत प्लाट की माटी को

एक पात्र में एकत्रित कर आह्वान किया जाता है कि आप सब इसमें समाहित हों और हमारे साथ गया चलें।इस पात्र को कभी अकेला नहीं छोड़ना चाहिए।। गया में सर्वप्रथम श्रद्धालु पुनपुन नदी के तट पर पिंडदान करते कारण पुनपुन वह स्थान है जहां गयासुर के चरण थे सर्वप्रथम चरण पूजा होती है अतः पुनपुन नदी के तट पर सर्वप्रथम पिंडदान की परम्परा है।आइये यह भी जानते हैं कि कौन सी तिथि को किस का श्राद्ध होता है। सर्वप्रथम पूर्णिमा को मृत्यु प्राप्त जातकों का श्राद्ध पूर्णिमा को तो होता ही है साथ ही अष्टमी, द्वादशी, और पितृ विसर्जन अमावस्या को भी करते हैं।जिस तिथि में जातक की मृत्यु हुई हो उसी तिथि को श्राद्ध किया जाता है।

नाना, नानी और ननिहाल पक्ष का श्राद्ध और जिनकी तिथि अज्ञात है उनका भी श्राद्ध पड़वा को करते हैं। अविवाहित मृतकों का श्राद्ध पंचमी को किया जाता है। माता की मृत्यु की तिथि कोई भी हो पर पिंडदान नवमी को श्रेष्ठ है।साथ ही जिन महिलाओं की तिथि का पता नहीं है तो उनका भी पिंडदान नवमी को किया जा सकता है। संन्यासियों का तर्पण एकादशी को एवं जिनके पिता संन्यासी हो गये हों उनका श्राद्ध तर्पण द्वादशी तिथि को, बच्चों का श्राद्ध त्रयोदशी को, अकालमृत्यु,जल में डूबने से मृत्यु, शस्त्र के आघात से मृत्यु, विषपान से मृत्यु पर चतुर्दशी की तिथि को एवं अमावस्या को ज्ञात अज्ञात सभी पितरों का श्राद्ध और तर्पण कर सकते हैं।गया से लौटकर सीधे घर ही आना चाहिए मंदिर आदि के दर्शन करके सत्यनारायण की कथा करवा कर, परिजनों इष्टमित्रों के साथ ब्राह्मण भोज करने के उपरांत गया पितृ कर्म पूर्ण होता है।साथ ही अगर हम चाहे तो निधन तिथि पर अपने पूर्वजों का श्राद्ध कर सकते, ब्राह्मण भोजन भी कराया जा सकता है ,परन्तु दक्षिणा निषेध है।।

पनीर : आधुनिक युग में बीमारियों का सबसे बड़ा कारण

- ललित चतुर्वेदी, लखनऊ

मनुष्य स्वयं को कितना भी आधुनिक बना ले लेकिन उसे लौट के अपने पुराने ज्ञान की ओर पलटना पड़ता है क्योंकि आधुनिक विज्ञान अधूरा है और प्राचीन शोध पूरी तरह जांचे परखे और हानिरहित होते हैं। अब बात करते हैं आज के सबसे प्रसिद्ध भोजन पनीर की, भारतीय लोग तो पनीर के इतने दीवाने हो चुके हैं कि इन्हें जहां पनीर मिल जाता है मजे लेकर खाते हैं, होटल में गए तो बिना पनीर खाये इनके गले से निवाला नही उतरता, कढ़ाई पनीर, शाही पनीर, मटर पनीर, चिली पनीर और भी न जाने क्या क्या पनीर.. समोसे में पनीर, पकौड़ी में पनीर, पिज्जा में पनीर, बर्गर में पनीर, मतलब जहां देखो वहां पनीर, भारत में शायद जितना दूध नही पैदा होता उससे ज़्यादा पनीर बनता होगा। चिकित्सा विज्ञान में सबसे प्राचीन विधा आयुर्वेद में दूध, दही, घी का जिक्र को हर जगह है किन्तु इस नामुराद पनीर का जिक्र कहीं नही मिलता, आखिर क्यों ? यदि पनीर इतना ही अच्छा है तो इसके बारे में किसी ऋषि ने कुछ लिखा क्यों नही ? जब गहराई से इसकी पड़ताल की तो पता चला कि आयुर्वेद में पनीर को निकृष्टतम भोजन के रूप में बताया गया है मतलब कचरा, और कचरा भी ऐसा वैसा नही, ऐसा कचरा जिसे जानवरों को भी खिलाने से मना किया गया है। दूध को फाड़ कर या दूध का रूप विकृत करके पनीर बनता है, जैसे कोई सब्जी सड़ जाए तो क्या उसे खाएंगे ?

पनीर भी सड़ा हुआ दूध है

भारतीय इतिहास में कहीं भी पनीर का उल्लेख नही है न ही ये भारतीय व्यंजन है, क्योंकि भारत में प्राचीन काल से ही दूध को विकृत करने की मनाही रही है, आज भी ग्रामीण समाज में घर की महिलाएं अपने हाथ से कभी दूध नही फाड़ती।

पनीर खाने के नुकसान

आयुर्वेद ने तो शुरू से ही मना किया था कि विकृत दूध लिवर और आंतों को नुकशान पहुंचाता है, लेकिन अब आधुनिक विज्ञान ने भी अपने नए शोध में साबित किया है कि पनीर खाने से आंतों पर अतिरिक्त दबाव आता है जिससे पाचन संबंधित रोग होते हैं, पनीर में पाया जाने वाला प्रोटीन पचाने की क्षमता जानवरों में भी नही होती फिर मनुष्य उसे कैसे पचा सकता है नतीजा होता है खतरनाक कब्ज, फैटी लिवर, और आगे चल कर शुगर, हाई कोलेस्ट्रॉल और हाई BP।

यही पनीर पेट की खतरनाक बीमारी IBS को भी पैदा करता है। ज्यादा पनीर खाने से खून में थक्के जमने की शिकायत होती है जो ब्रेन हैमरेज और हार्ट फेलियर का कारण बनता है।

वहीं ये पनीर हार्मोनल डिसबैलेंस का कारण बनता है जिससे हाइपोथायरायडिज्म, या हाइपरथायराइडिज्म पनपता है, महिलाओं में गर्भ धारण करने की क्षमता कम होती है पुरुषों में नपुंशक्ता आती है। कुल मिला कर यदि देखा जाए तो ये पनीर स्वाद तो सिर्फ जीभ को देता है लेकिन हानि पूरे शरीर की करता है,

इसलिए अगली बार पनीर खाने से पहले सोचिएगा जरूर।

त्याग पूर्वक भोग

- बीना मिश्रा, मैनपुरी/आगरा।

"ईशावास्यमिदं सर्वं,यत्किञ्च जगत्यां जगत।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा,मा गृधः कस्यचिद्धनम।।"

उक्त वेद वाक्य प्रति क्षण परिवर्तनशील इस संसार को भोगने का आदेश देता है। इस संसार में आ ही गए हो तो इसे भोगो, पर सावधानी देता है कि "त्यक्तेन भुञ्जीथा" अर्थात त्यागपूर्वक भोगो। क्योंकि जिस धन दौलत को आप भोगना चाहते हैं वह किसकी है? यह दौलत संसार में मिलती है और मृत्योपरांत संसार में ही छूट जाती है।

कमाया हुआ धन सत्पात्रों में बांटना अर्थात उसे त्यागना धन की रक्षा करता है,नदी तालाब आदि जलाशय पानी से भरते हैं फिर सिंचाई आदि के लिए जल छोड़ा जाता है, पानी का बहाव ही इसकी रक्षा करता है,इसी भांति दीपशिखा स्वयं को जलाकर संसार को प्रकाशित करती है। कहने का तात्पर्य यह है कि "संग्रह अनर्थ की जड़ है"।मानवीय गुणों में त्याग गुण का विशेष स्थान है।इसे कहना भले ही आसान लगे पर कर सकना- वह भी यश कामना के बिना बहुत कठिन कार्य है।

त्याग का मर्म क्या है?

अपने पास से निरर्थक वस्तु हो या अनावश्यक सामान हो तो उसे हटा देना चाहिए तभी नएपन की संभावना होती है। जीवनकी विकास यात्रा का अनिवार्य अंग भी है त्याग। मन वचन कर्म से अशुभ का त्याग करना चाहिए। त्याग के बिना नवाचरण नहीं हो सकता। "संग्रह विनाश की जड़ है"। क्रोध ईर्ष्या ,द्वेष ,मोह ,ममता लोभ आदि बुराइयों के छूटने पर ही दया ,प्रेम, करुणा ,श्रद्धा, व सत तत्वों का उदय होता है।त्याग अनेक प्रकार से और अनेकों चीजों का किया जा सकता है।जैसेः- धन,मकान,अन्न, परिवार, स्त्री,पद,नींद,शरीर आदि। यह असीमित है।आत्म नियंत्रण के धनी लोग इस कठिन कार्य को सहजता से कर लेते हैं।इतिहास ऐसे मनुष्यों को रेखांकित करता है।महर्षि दधीचि का अस्थि त्याग, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का राज्य त्याग, महात्मा बुद्ध का राज्य व परिवार त्याग, महाराजा शिवी का तन त्याग, पन्नाधाय का पुत्र त्याग, भामाशाह का धन त्याग, सम्राट अशोक का शस्त्र- त्याग आदि त्याग के आदर्श उदाहरण है।

राष्ट्र रक्षा के लिए भारत माता की वेदी पर अनंत लालों ने सदैव से ही सर्वस्व यानी हंसते-हंसते प्राणोत्सर्ग किया है और करते रहते हैं। महर्षि वेदव्यास जी कहते हैं कि त्याग का रहस्य इंद्रिय संयम है। वे आगे कहते हैं "कुल की रक्षा के लिए व्यक्ति का ,ग्राम की रक्षा के लिए कुल का, देश की रक्षा के लिए ग्राम का, आत्मा की रक्षा के लिए पृथ्वी का त्याग कर देना चाहिए। संसार में कोई भी बिना त्याग के सुख व सुरक्षा नहीं पा सकता। त्याग के बिना निर्भय भी नहीं हो सकता।जिस धन को मुश्किलों से कमाते हैं उसका

त्याग/ दान करना भी कठिन कार्य है। धन आवश्यकता है और शुभ कर्म करने का साधन भी। परंतु धन सब कुछ है यह अवांछनीय दृष्टिकोण है।अतः अर्जन के साथ विसर्जन भी महत्वपूर्ण है।संतवाणी कहती है कि.

"गोधन गजधन,वाजिधन,और रतन धन खान।
जब आवे संतोष धन सब धन धूरि समान।।"

बहुत से अपराधों व पापों से बचने के लिए अपने पूर्वजों द्वारा प्रदत्त गुरु मंत्र "सादा जीवन उच्च विचार " हमें अपनाना चाहिए और अपने भविष्य यानी संतानों को इसके लिए प्रेरणा देनी चाहिए।

जय समाज जय संगठन।।

महिलाओं में गहनों की महत्ता

- मिथलेश चतुर्वेदी, (करेंटी/ लखनऊ)

भारतवर्ष विविधताओं का राष्ट्र है। यहाँ अलग-अलग धर्म और समुदाय के लोग अपनी-अपनी मान्यताओं एवं परम्पराओं का पालन करते हुये अनेक प्रकार के रीति रिवाजों का पालन करते है एवं परम्पराओं से ही पोषित आभूषणों को धारण करते है, विशेषकर महिलायें। ये आभूषण भारतीय हिन्दु महिलाओं के सोलह श्रंगार के अभिन्न अंग है और इसमें माथे की बिन्दी से लेकर पैरो में पहनने वाली बिछिया तक सम्मिलित है। चूंकि हिन्दू भारतीय महिलायें परम्परानुसार ये आभूषण पहनती चली आ रही है तो सहज प्रश्न उत्पन्न होता है कि हमारे पूर्वजो ने इन सबका प्रयोग क्यों किया? क्या ये सिर्फ सुन्दरता बढ़ाने के लिये था या इसका और भी कुछ उद्देश्य था? उल्लेखनीय है कि अधिकतर आभूषण ज्योतिष, आयुर्वेद एवं शारीरिक संरचना के अनुसार निर्मित किये गये है। ज्योतिषीय गणना के अनुसार हमारी अंगुलियों मे चन्द्र, शुक्र एवं अन्य ग्रहो का वास होता है। इसी प्रकार आयुर्वेद के अनुसार मनुष्य का सिर ठंडा तथा पैर गर्म होने चाहिये। मुख्य तौर पर भारतीय हिन्दु महिलाओं के मुख्य आभूषण मांग टीका एवं बिन्दी, मंगलसूत्र, नाक की कील या नथ, झुमके, गले का हार, बाजूबन्द, अँगूठियाँ, करधनी, पायल एवं बिछिया आदि है। इसमें से कुछ आभूषण सोने से बने होते है एवं कुछ चाँदी के बने होते है। हमारे पूर्वजों को इतना अगाध ज्ञान था एवं वह जानते थे कि स्वर्ण धातु से बने आभूषणों को कमर से उपर पहना जाता है एवं चाँदी की धातु से बने आभूषणों को कमर के नीचे पहना जाना चाहिये। स्वर्ण धातु से निर्मित आभूषणों पर एंटी इन्फ्लेमेटरी गुण पाये जाते है जिससे महिलाओ का रंग निखरता है तथा उनके स्वास्थ्य को अच्छा बनाता है।

इसी प्रकार चाँदी की धातु से निर्मित आभूषण महिलाओं की हड्डियों एवं प्रजनन तन्त्र को स्वास्थ्य प्रदान करते है। इसीलिये कमर से उपर स्वर्ण धातु के एवं कमर के नीचे चाँदी की धातु के आभूषण हमारी महिलाये पहनती है। हमारी आज की पीढ़ी परम्परानुसार इनमें से कुछ का पालन करती है और कुछ का नही लेकिन यह जानना बहुत आवश्यक है कि इन्ही परम्पराओं में हमारे पूर्वजो ने स्वास्थ्य, मन एवं शारीरिक प्रतिरक्षा प्रणाली को सूचारु बनाये रखने के लिये बिना कम्प्यूटर एवं स्कैनर इनको विकसित किया था और इनको दैनिक जीवन की गतिविधियों में जोड़ दिया जिससे महिलाओं का स्वास्थ्य दैनिक आधार पर ठीक रहे और उनको प्रजनन सम्बन्धित अनेक कष्टों से बचाया जा सके।

उक्त आभूषणों को जब महिलायें पहनती है तो महिलाओं के हाथ, कमर एवं पैरो के आसपास के अंगों में गति बढ़ती है जिससे रक्त का प्रवाह तेज होता है और यह स्थिति महिलाओं को शारीरिक रुप से लाभ प्रदान करती है। प्रायः आभूषण स्वर्ण, रजत अथवा काँस्य के होते है और इन धातुओ के आभूषण पहनने से महिलाओ के शरीर में घर्षण से उर्जा बढ़ती है एवं इन आभूषणों द्वारा एक्यूप्रेशर का कार्य किये जाने एवं रक्त संचार बेहतर होने के कारण महिलाओं की शारीरिक एवं मानसिक स्थिति अच्छी रहती है। इस लेख में महिलाओं के आभूषण पहनने से होने वाले लाभ तथा उसके पीछे क्या वैज्ञानिक तथ्य है, का विवेचन है।

मांग का टीका एवं बिंदिया:-

जैसा कि हम सब जानते है कि महिलाओं के सोलह श्रंगार में मांग टीका एवं बिंदिया एक अनमोल श्रंगार है। विवाह से पूर्व कन्यायें बिंदी केवल सौदर्य वृद्धि के लिये लगाती है लेकिन विवाह के पश्चात विवाहित स्त्री का मांग टीका पहनना या बिंदी लगाना उसके सुहाग का प्रतीक है। मांग टीका का लटका हुआ गोल हिस्सा या बिन्दी महिलाओं के माथे पर बीचोबीच स्पर्श करते है। ये न सिर्फ महिलाओं की खूबसूरती बढ़ाते है बल्कि उनके मन की एकाग्रता को भी बढ़ाती है। योग विज्ञान के अनुसार जहाँ पर बिन्दी लगाती है, वहीं हमारा आज्ञाचक्र भी स्थित है और इसका सम्बन्ध हमारे मन से होता है। आज्ञा चक्र के स्थान पर ही तीसरे नेत्र की परिकल्पना है। यह स्थान सबसे प्रभावशाली होता है अतः इससे महिलाओं का मन एकाग्र होता है और इसीलिये महिलायें स्वाभाविक रुप से बिन्दी अपने माथे के बीचोबीच लगाती है। पुरुषों में यह स्थान तिलक का है। माथें का मध्य भाग जहाँ महिलाये बिन्दी लगाती है वह सुप्रेटोक्लीयर नर्व (Supretochlear

Nerve) से सम्बन्धित हे जिसमें आँखों एवं त्वचा के लिये फाइबर उपस्थित है एवं यह आँखों को अलग अलग दिशाओं में देखने में काफी मददगार है। बिन्दी लगाने वाले स्थान के पास से कान से सम्बन्धित नस भी गुजरती है जिस पर दबाव बनाने से सुनने की क्षमता बढ़ती है। हार्वड यूनिवर्सिटी के एक शोध में यह पाया गया है कि टीका पहनने अथवा बिन्दी लगाने वाली महिलाओं का स्वास्थ्य कम खराब होता है एवं उनमें सहनशीलता के साथ-साथ इम्यूनिटी भी बढ़ती है। हमारा आयुर्वेद एवं एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति भी यही कहती है। वैज्ञानिक मान्यता के अनुसार माँग टीका महिलाओं के शारीरिक तापमान को भी नियन्त्रित करता है जिससे उनकी निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है।

2) नाक की लौंग एवं नथ:-

महिलायें अधिकतर नाक के बाई ओर को छिदवाती है क्योंकि बायीं नासिका से चलने वाली नसे महिला के प्रजनन अंगो से जुड़ी होती है एवं उसमें सोने की कील या लौंग पहनती है। विवाह एवं अन्य त्योहारों पर महिलायें नथ भी पहनती है। महिलाओं के नाक छिदवाने का प्रमुख कारण आयुर्वेद के अनुसार इसका मासिक धर्म से जुड़ा होना है। यह ऐंठन के दर्द को कम करता है एवं यह प्रजनन अंगो को बेहतर रुप से कार्य करने में मदद करता है। नाक में विशिष्ट नोड के आसपास नाक छिदवाने से बाँझपन की आशंका कम होती है। सुश्रुत संहिता के अनुसार नाक में छेद कराकर नाक में नथ अथवा लौंग पहनने का सीधा सम्बन्ध महिला के गर्भाशय से होता है एवं बच्चों के प्रजनन के समय होने वाली परेशानियों को भी कम करता है। इसके अलावा इससे श्वास सम्बन्धित रोगों से लड़ने की शक्ति मिलती है एवं कफ, सर्दी, जुकाम में लाभ मिलता है। हमारे पूर्वजो को नाक की संरचना एवं उसमें प्रदत्त नसों का ज्ञान था और वह जानते थे कि ये नसे महिलाओं के प्रजनन तन्त्र को प्रभावित करती है अतः लौंग को आभूषण के रुप में दैनिक रुप से पहनने हेतु निर्धारित किया। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नाक की लौंग अशवा नथ वैवाहिक सम्बन्धों को मजबूत बनाती है।

3) कान के झुमके अथवा इयर रिंग:-

कर्ण छेदन बालक एवं बालिकाओं दोनो का होता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कान में सोने का आभूषण पहनने से वृहस्पति ग्रह की कृपा होती है तथा बुध ग्रह की स्थिति बेहतर होने के साथ-साथ राहू एवं केतु ग्रह से सम्बन्धित बुरे प्रभाव समाप्त हो जाते है। शरीर शास्त्र के अनुसार दोनो कान के पास बहुत महत्वपूर्ण एक्यूप्रेशर प्वाइन्ट्स होते है। इसमें पहला प्वाइन्ट होता है ''मास्टर सेंसोरियल" और दूसरा प्वाइन्ट होता है ''मास्टर सेरेब्रल''। ये प्वाइन्टस सुनने की क्षमता को बढ़ाने का कार्य करते है। एक्यूप्रेशर

के अनुसार कान छिदवाने से इसका असर ओसीडी (आब्सेशिव कम्पल्शिव डिसआर्डर) पर पड़ता है जिसके कारण घबराहट कम होती है और मानसिक बीमारियाँ भी दूर होती है। आयुर्वेद में माना गया है कि कान के निचले हिस्से में एक प्वाइन्ट होता है जिसे छेदने पर यह दिमाग पर प्रभाव डालता है जिससे दिमाग के कई हिस्से सक्रिय हो जाते है और आपका बौद्धिक स्तर भी बढ़ता है। आयुर्वेद के अनुसार ही कान छिदवाने एवं उसमें सोने का आभूषण धारण करने से महिलाओं में काम उर्जा नियन्त्रित होती है एवं प्रजनन अंगो के स्वास्थ्य को बहुत लाभ होता है तथा सन्तान स्वस्थ एवं निरोगी होती है।

4) गले का हार:-

भारतीय महिलायें अपने गले में सोने की चेन, मंगलसूत्र एवं सोने का हार पहनती है। मंगलसूत्र पति-पत्नी के प्रेम और सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। एक्यूप्रेशर सिद्वान्तों के अनुसार गले के आस-पास कई तर्न्त्रिका चैनल मौजूद होते है एवं उस पर गले में पहनने वाले आभूषणों से घर्षण होता है जिससे रक्त संचार को नियन्त्रित करने में मदद मिलती है। गले में सोने का हार या मंगलसूत्र पहनने से मानसिक चेतना उन्नत होती है तथा उत्तेजनाओं के प्रति सक्रियता और सतर्कता में भी सुधार होता है। सोने की चेन अथवा हार पहनने से महिलाओं की सुन्दरता में वृद्धि के साथ-साथ उनकी त्वचा का रंग भी निखरता है। स्वर्ण धातु के विषय में हमारे पूर्वजो को यह ज्ञात था कि यह धातु त्वचा के साथ प्रतिक्रिया नही करता है और अपने एंटी इन्फलामेटरी गुण के कारण रोग नाशक होता है। स्वर्ण धातु कोशिकाओं के बीच विद्युत संकेतो के संचार में सुधार करता है जिससे महिलाओं में इम्यूनिटी बढ़ती है, इसीलियें महिलाये मांग टीका, झुमकी अथवा कर्णफूल, गले का हार एवं कलाइयों में कंगन आदि स्वर्ण धातु के आभूषण पहनती है।

स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2024 को मोती नगर चौराहे लखनऊ पर झण्डारोहण 90 वर्षीय पं कृष्ण मोहन मिश्रा ने किया, उन्होंने अपने प्रेरणास्त्रोत संबोधन में स्वतंत्रता संग्राम का वर्णन करते हुए बताया कि कैसे वे क्रांतिकारियों को छिपाने में मदद करते थे।आपका जन्म सन् 1934 में लखनऊ में हुआ था,इटावा के प्रसिद्ध ख्यालीराम मिश्र के सुपुत्र मदन मोहन जी आपके पिताजी थे। आपकी शिक्षा दीक्षा लखनऊ में ही हुई। छात्र जीवन में आप टेबिल टेनिस एवं बैडमिंटन के अच्छे खिलाड़ी रहे।स्नातक की डिग्री हासिल करने के बाद सन् 1957 में आपकी शादी होली पुरा निवासी महेंद्र नाथ जी की सुपुत्री पुष्पा जी से हुई थी, पुष्पा जी के बाबा बनवारी लाल पांडे ने लखनऊ में कई मकानों का निर्माण कराया था। कृष्ण मोहन जी के लिए शादी सौभाग्यशाली रहीं, शादी के तुरंत बाद ही आपको उ०प्र०पुलिस विभाग में दरोगा के पद पर नियुक्ति मिल गई।

आपकी पत्नी पुष्पा जी सादगी प्रतिमूर्ति थी, गृह कार्य के साथ ही सिलाई कढ़ाई में काफी दक्ष थी, उन्होंने अपने पति को शपथ दिलाई कि पुलिस की नौकरी के बाबजूद कुछ भी हो जाए परन्तु घर में अधर्म का पैसा नहीं आना चाहिए। अतएव पुलिस विभाग का रवैए के साथ तालमेल नहीं बैठा पाएं, दो साल के बाद ही आपने सीआईडी में ट्रांसफर करा लिया, वहां आपकी दक्षता को काफी महत्व मिला, परिणामस्वरूप प्रधानमंत्री नेहरू जी, इंदिरा जी, राजीव जी की सुरक्षा व्यवस्था में भी आपको सेवा का अवसर मिला। राष्ट्रपति डॉ राधाकृष्णन के सुरक्षा व्यवस्था में आपको कुछ समय तक सेवा प्रदान करने का अवसर मिला।सन् 1962 में आपने लखनऊ विश्वविद्यालय से चीनी भाषा में डिप्लोमा कोर्स किया। इसके बाद गृह विभाग की विशेष कृपा से दुभाषिए की शिक्षा के लिए मैसूर भेजा गया।कई अवसर पर आपने विदेशी मेहमानों के लिए दुभाषिया की भूमिका निभाई। इसके लिए कृष्ण मोहन जी को सम्मानित भी किया गया। सन् 1995 में बेदाग छवि के साथ पुलिस विभाग से सेवानिवृत हो गए। उसके बाद राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के गठन पर वहां दिल्ली में सेवा का अवसर मिला, सन् 1999 में मानवाधिकार आयोग से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली, उसके बाद कुछ प्राईवेट नौकरियां की,अंत में कैंसर एड सोसायटी लखनऊ में लगभग 12 वर्ष तक सेवा प्रदान करने के बाद सन् 2017 में सेवा निवृत्त हो गए। सन् 2013 में आप की पत्नी पुष्पा जी का निधन हो गया। पुष्पा जी एक विदुषी महिला होने के साथ ही मोहल्ले एक मंदिर की व्यवस्था भी देखती थी, जहां साप्ताहिक सत्संग में आपका भजन गायन काफी प्रसिद्ध था। पत्नी के स्वर्गवास से आप टूट से गए, पर शीघ्र ही सामाजिक जीवन में सक्रिय होने लगें, आपने पुष्पा जी की स्मृति में एक पुस्तक का प्रकाशन भी कराया था।आप चतुर्वेदी मंडल के अध्यक्ष भी रहे, अपने कार्यकाल में लखनऊ में सामूहिक जनेऊ के साथ ही वाटर पार्क में पिकनिक का आयोजन भी हुआ।

आपके परिवार में दो लड़के एवं दो लड़कियां हुई। बड़ी सुपुत्री सीमा का शादी के कुछ समय पश्चात कोटा में निधन हो गया। छोटी सुपुत्री सुधा कोलकाता में अपने परिवार के साथ रहती हैं। आपके बड़े सुपुत्र शिशिर ने मद्रास से लेदर टेक्नोलॉजी में एम टेक किया , उसके बाद कई कम्पनियों में उच्च पदों पर कार्यरत रहते हुए सेवानिवृत्त होने पर जालंधर में अपने मकान में अपने परिवार के साथ रहते हैं, जबकि छोटे सुपुत्र समीर ग्रामीण बैंक में उच्च पद पर कार्यरत हुए कानपुर में अपने मकान में अपने परिवार के साथ रहते हैं।आपका नाती साहिल नेवी में लेफ्टिनेंट कमांडर है।

कृष्ण मोहन मिश्रा जी लखनऊ में एकाकी जीवन का आंनद लेते हुए सक्रिय रहते हैं। आपके धर्मपुत्र असीम राय ही कृष्ण मोहन जी की देखभाल करते हैं, असीम जी मिलने पर पालागन ही करते हैं। (र.क्र. 2507)

- सौरभ चतुर्वेदी (लखनऊ)

संपादक के नाम पत्र

आदरणीय संपादक जी, चतुर्वेदी चंद्रिका का आपके संपादन में खिला प्रथम अंक देख कर कतई ऐसा आभास भी नहीं हुआ कि कि अपनी चंद्रिका का संपादक कोई नवीन व्यक्तित्व होगा, कारण गागर में सागर समाहित है ,इसके लिए आपको अध्यक्षा उषा जी को, जो कि मेरी भांजी भी है और मंत्री शशांक जी को हृदय पटल से भूरि भूरि आशीर्वाद। चतुर्वेदी के इस अंक में जब मैं ने अपने नाना दानवीर सरलता और सादगी की प्रतिमूर्ति स्व प्यारेलाल जी पर आधारित लेख जिसे मेरी कला मौसी एवं थुला मौसी की पुत्री और पुत्र (क्षमा एवं हरी भाई) द्वारा लिखा गया, पढ़ कर उन महापुरूष का सम्पूर्ण चित्रण आंखों के सामने आ गया। परमआदरणीय, नाना जी के लिए लिखने के लिए शब्द भी कम पड़ जाये। प्यारे लाल जी बीकानेर हाइकोर्ट के प्रधान न्यायाधीश रहे, सादगी और ईमानदारी की प्रतिमूर्ति रहे नानाजी दानवीर कहलाये, कितने ही विद्यार्थियों को अपने पास से वजीफा दिया,उनको पढ़ाई में पूरी मदद दी और उन्हें स्वावलंबी बनाया, विधवाओं को भी नियमित मदद करते थे और मनीआर्डर की रसीद फाड़ देते थे। महासभा के १९२० में हुए प्रथम अधिवेशन में आप महामंत्री चुने गये और १९२५में हुये अधिवेशन में महासभा का अध्यक्षीय पद सुशोभित किया।जब बीकानेर में मृत्यु हुई तो कोई भी पारिवारिक बांधव पास में नहीं था इनके भांजे होलीपुरा निवासी अमरनाथ जी (अमर गुरु) ने आपका अंतिम संस्कार किया था। वैसे तो सबकुछ हरी भाई और छोटी बहन क्षमा ने लिख दिया है, नानाजी जैसा महापुरुष समाज को हमेशा हमेशा प्राप्त होता रहे यही कामना है और नानाजी को सच्ची श्रद्धांजलि भी यही है ।

– **गजेन्द्र कुमार चतुर्वेदी,** फरौली,

***

आदरणीय संपादक जी

पालागन। चतुर्वेदी चंद्रिका का नवीनतम अंक का मुखपृष्ठ देखते ही भोपाल अधिवेशन में न पहुंच सके, अधिवेशन की रिपोर्ट एवं चित्र देखकर साक्षात उपस्थित का आभास हुआ, उससे पश्चाताप कुछ कम हो गया। नवांगतुक सभापति उषा जी, मंत्री शंशाक जी एवं संपादक दिलीप जी को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाइयां।

अगले अंक की प्रतीक्षा में

– **मुकेश** (होलीपुरा/कोलकाता)

***

सम्पादक जी, सप्रेम पालागन।

चंद्रिका का जुलाई अगस्त अंक मिला, सभापति उषा जी एवं शंशाक जी का आभार प्रसून ने महासभा के बदलते स्वरूप का आभास दिया। अधिवेशन की रिपोर्ट के साथ ही पूर्व अध्यक्ष प्यारे लाल जी पर जानकारी पूर्ण लेख प्रशंसनीय है। नवागत संपादक दिलीप जी को हार्दिक शुभकामनाएं,अपनी चंद्रिका को शंशाक जी ने नये स्वरूप में हम सबके सामने पेश किया आपसे भी ऐसी उम्मीद रखते हैं की आप चनद्रिका को और उचाईयों तक पहुचायेंगे

– **संजय मिश्रा,** कानपुर

वार्तालाप

कुछ देर मुझे सुनने के बाद
उसने कहा कि मै भी तो यही कह रहा था
लेकिन उसके
बाद उसने जो कुछ भी कहा
वह वो नहीं था जो मै कह रहा था .

कुछ देर बाद
मैंने उसे सुनना बंद कर दिया
असल में मै सिर्फ अपनी कहना चाहता था
इसलिये जैसे ही वह सांस लेने के लिये रुका
मैंने उससे कहा –
मै भी तो यही कह रहा था .

– **संतोष चौबे, भोपाल**

हिन्दी भाषा

भारत मां के भाल की बिंदी
भारत वर्ष की भाषा हिन्दी
इसे इंडिया ने ठुकराया
अंग्रेजी से मेल बढ़ाया।।
सेक्युलर बन हो गए लूले
धर्म संस्कृति सब सब कुछ भूले
फिर से हो भारत गुण गान
हिंदी भाषा का सम्मान।।
हिंदी सत्य सनातन भाषा
राष्ट्र संस्कृति की परिभाषा।
हम हिंदी की अलख जगाएं
नीम राष्ट्र भाषा अपनाएं

– **नूतन चतुर्वेदी,** नीम

शाखा समाचार

कानपुर

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 27/28 जुलाई 2024 को स्व. बाबू ओंकार नाथ जी की स्मृति में मेधावी,योग्यता सम्मान एवम धर्मशाला स्थापना दिवस के रूप में धर्मशाला कानपुर में सायंकाल 6:00 बजे भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम बाबू ओंकारनाथ जी धर्मशाला समिति के तत्वाधान में एवम कानपुर चतुर्वेदी सभा द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। दिनांक 27 जुलाई को मेधावी छात्र सम्मान समारोह एवं समाज गौरव सम्मान समारोह में समाज के सम्मानित होने में

1- ओम चतुर्वेदी, 2- कुमारी शांभवी चतुर्वेदी, 3- कुमारी गौरंगी चतुर्वेदी, 4 -कुमारी खुशी चतुर्वेदी, 5- कुमारी अनन्या चतुर्वेदी 6-साहिल चतुर्वेदी

समाज गौरव सम्मान के लिए

आकर्ष चतुर्वेदी ,मनन चतुर्वेदी, हर्ष चतुर्वेदी, सौम्या चतुर्वेदी, आयुषी चतुर्वेदी, अन्वीशा चतुर्वेदी

(अन्वीशा के द्वारा GATE परीक्षा पास करके आईआईटी दिल्ली M TEC *में एडमिशन प्राप्त किया) को *सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में धर्मशाला संयोजक विकास चतुर्वेदी (चुन्ना भैया) चतुर्वेदी सभा कानपुर के संरक्षक श्री अविनाश भैया, श्री धीरेंद्र नाथ चतुर्वेदी एवं श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कानपुर के अध्यक्ष श्री स्वतंत्र प्रकाश चतुर्वेदी, महामंत्री प्रवेश जी, लोकेंद्र जी के साथ समस्त कार्यकारणी सदस्य के साथ समाज के श्री शतदल जी, श्री काका जी, श्री ज्ञानप्रकाश जी , अनुराग जी, अनूप जी, संजय जी, श्री अतुल जी, श्री विश्वास जी, श्री जयंत जी के अलावा कानपुर चतुर्वेदी समाज के कई सम्मानित बांधव उपस्तिथि रहे। समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में पुरूस्कार वितरण श्री सतीश चतुर्वेदी (पूर्व मंत्री महाराष्ट्र सरकार व संरक्षक श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा) के द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का सफल संचालन श्री आशुतोष चतुर्वेदी, प्रीति जी के द्वारा किया गया। कार्यक्रम के उपरांत सभी उपस्थित समाज ने स्वादिष्ट सुरुचिपूर्ण भोजन का आनंद उठाया। दिनांक 28 जुलाई को बाबू जी की स्मृति में समाज के एवम कानपुर के अधिकांश प्रतिष्ठित की उपस्तिथि कार्यक्रम की सकारात्मकता के साक्षी* बने । इस सफल कार्यक्रम में कानपुर के कुछ ऐसे व्यक्तित्व को आमंत्रित किया गया जिन्होंने उनके जीवन से जुड़ी बाबू जी की स्मृतियों को सभागार में उपस्थित अतिथियों के *समक्ष साझा कर सभी की आंखों को नम कर दिया ! सर्व प्रथम उनकी पौत्री कु गौरी ने अपने बाबा बाबू जी की कुछ ह्रदयस्पर्शी बाते अपने बचपन

की जब सभी को सुनाई तो पूरे सभागार में सभी की आंखे नम होने लगी।

आदमी कमाओ रुपैया में कछु नाई धरो है (Earn friends, there is no real value in money)

आदमी से प्यार करौ, बाकी पोजीशन से नाय।

Love the person, not their status. ब्रज भाषा में कहे बाबू जी के ऐसे कई बहुमूल्य यादगार वाक्यों को बहुत ही सुंदर ढंग से सभी के ह्रदय पटल तक पंहुचाने का सफल प्रयास उनकी पौत्री गौरी पुत्री विकास जी और पौत्र अनंत ,ने एक एक माला के मोतियों सा चुनकर शब्दो में पिरोकर किया ! महान व्यक्तित्व के धनी समाज सेवी *स्वर्गीय बाबू ओंकार नाथ चतुर्वेदी जी*की इस वर्ष 28th जुलाई को 92वीं वर्ष गाँठ एवम 19 वां निवार्ण दिवस के रूप में यादगार स्मृति कार्यक्रम में मुख्य रूप से नागपुर से पधारे श्री सतीश जी पूर्व मंत्री महाराष्ट्र सरकार, संरक्षक (श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा,) गुड्डा भैय्या, चुन्ना भैय्या, दीपक कोठारी (निदेशक पान पराग), संजय गुप्ता (निदेशक दैनिक जागरण), श्री दिनेश त्रिवेदी जी (पूर्व रेल मंत्री भारत सरकार)डॉ एस् के भट्टर, डॉ बी के मिश्रा, डॉ अनिल जैन ,डॉ हर्ष अग्रवाल, डॉ राजीव अग्रवाल , मोहित कक्कड़ ,कानपुर के माननीय विधायक, आदि के साथ कानपुर के अनेकों गणमान्य व्यक्ति तथा श्री माथुर चतुर्वेदी सभा के संरक्षक श्री अविनाश भैय्या,श्री धीरेन्द्र चतुर्वेदी ,सभा के अध्यक्ष श्री स्वतंत्र प्रकाश चतुर्वेदी, महामंत्री श्री प्रवेश जी, लोकेन्द्र चतुर्वेदी, के अतरिक्त कानपुर सभा के सभी कार्यकर्णी सदस्य ,एवम समाज के सक्रिय

बांधव आशूतोष,अतुल ,अनुराग संजय अनूप ,विश्वास के अलावा कई समाज के गडमान्य व्यक्ति ,बांधव उपस्थित रहे । कार्यक्रम का सफल संचालन गौरी चतुर्वेदी, अनंत चतुर्वेदी, आशुतोश चतुर्वेदी (आशू)के द्वारा किया गया * समारोह के अंत में बाबू के सामाजिक कार्यों पर विस्तृत रूप से विकास जी चुन्ना भैया ने प्रकाश डाला और सभी अतिथियों के आगमन पर आभार व्यक्त किया । उसके उपरांत प्रीतिभोज एवं बाबू की मनपसंद चाट का आनंद आमंत्रित बान्धवों द्वारा लिया गया।

ग्वालियर

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा ग्वालियर के महिला मण्डल द्वारा

तीज उत्सव का कार्यक्रम दिनांक 04/08/24 दिन रविवार को स्थानीय गेस्ट हाउस में बहुत ही हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम रचना जी,अंजली जी,रोली जी व अन्य महिला शक्ति के सामूहिक प्रयास से आयोजित हुआ। सर्वप्रथम गणेश वंदना श्रीमति क्षमा जी एवं अनिता जी द्वारा प्रस्तुत की गई। इसके पश्चात सावन के मनमोहक गीतों को प्रस्तुत किया गया। जिसमें प्रमुख रूप से श्रीमती सुनीलम जी,विदुषी जी, रंजना जी,दीपाली जी,ममता जी,डॉली जी,सुजाता जी व अन्य महिलाओं द्वारा प्रस्तुति देकर सभागार को उर्जावान बना दिया। इसी क्रम में श्रीमति भावना जी,मोना जी,दिशा जी,दिव्या जी ,अर्चना जी,सीमा जी,कु.साक्षी जी,कु.मान्या जी,कु.सुरभि जी, कु.तनिष्का जी कु,परी जी द्वारा मनोहारी नृत्य प्रस्तुत करके कार्यक्रम में और भी चार चांद लगा दिये। इस कार्यक्रम में श्री मति नीलू जी,ज्योति जी,दीपा जी,प्रियंका जी,अर्चना जी,चारू जी,मिनाक्षी जी ,रागिनी जी का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री मति अलका चतुर्वेदी द्वारा किया गया। कार्यक्रम समापन उपरांत सभी ने सुरुचिपूर्ण भोजन व चाट का आनन्द लिया।

– **अजय तिवारी,**
अध्यक्ष श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा ग्वालियर

***

मुंबई

श्री मुंबई माथुर चतुर्वेदी समुदाय के सहयोग से १८ अगस्त को

टिकुजी नी वाडी वाटर पार्क और एम्यूजमेंट पार्क में आयोजित पिकनिक के अवसर पर, हम सभी आये हुए सदस्यों का हृदय से धन्यवाद करते हैं। विशेष रूप से, हम श्री पंकज जी चतुर्वेदी, श्रीमति अंजू चतुर्वेदी, श्री ईश्वर चतुर्वेदी, डॉ मधु चतुर्वेदी, श्री मुकेश चतुर्वेदी, श्रीमती शिखा चतुर्वेदी, श्री निरुपम चतुर्वेदी, श्रीमती रूपम चतुर्वेदी, श्री सुशील पाठक, श्रीमती शिखा पाठक, श्रीमती हंसबाला चतुर्वेदी, श्री कैलाश चतुर्वेदी, श्री पीयूष चतुर्वेदी, श्रीमती रेखा चतुर्वेदी, श्री प्रदीप चतुर्वेदी, श्रीमती प्रीति चतुर्वेदी, श्रीमती शिल्पा चतुर्वेदी, श्री पराग चतुर्वेदी, श्रीमती काव्या चतुर्वेदी, श्री प्रदीप चतुर्वेदी, श्रीमती बीना चतुर्वेदी, सुमित, निमिशा, अदिति, रियांश का धन्यवाद देते हैं। आपकी उपस्थिति और सहयोग से यह कार्यक्रम सफल हुआ है। हम आपके सहयोग और समर्थन के लिए आभारी हैं।

– **मधुपम चतुर्वेदी,** सचिव

समाज समाचार

- अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री मुक्ता प्रसाद चतुर्वेदी (फरौली/मुंबई) की प्रथम पूर्ण तिथि पर 5100/– अन्नपूर्णा सहायता हेतु जयदीप चतुर्वेदी,सोनू (मुंबई), हिमांशु चतुर्वेदी, पिंटू (मुंबई) (र.क्र. 2371)
- **संशोधन** : भदावर भूगोल, इतिहास एवं परंपरा नाम से जून 2024 में प्रकाशित आलेख भरत जी के समय में प्रकाशित आलेख का पुनः प्रकाशन है। साभार चतुर्वेदी चंद्रिका

छपते-छपते

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा एवं भोपाल चतुर्वेदी गुइयां का सावन की मल्हार ऑनलाइन संपन्न

पारंपरिक लोकगीत हमारी संस्कृति धरोहर है इन्हें जीवित रखना हमारा कर्तव्य : उषा

सब प्रतिनिधि ।। भोपाल

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का अखिल भारतीय सावन की मल्हार कार्यक्रम उत्साह पूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में कजरी, मल्हार एवं झुला गीत संगीत के साथ जूम पर चतुर्वेदी समाज की महिलाओं द्वारा प्रस्तुत किए गए।

कार्यक्रम में फिल्मी गीतों पर प्रतिबंध था। पारंपरिक लोकगीत का एकल गायन देश र की महिलाओं ने सम्मिलित होकर प्रस्तुत किए। समाज की वरिष्ठ महिलाओं द्वारा भी अपने समय की कजरी गाकर वातावरण को भावुक बना दिया। सर्वप्रथम शारदा चतुर्वेदी द्वारा भगवान शंकर की प्रतिमा के सामने दीप प्रज्वलित करके शुभारंभ किया। रक्षा चतुर्वेदी भिवानी राजस्थान द्वारा गणेश वंदना की गई। चतुर्वेदी महासभा की राष्ट्रीय सभापति उषा चतुर्वेदी द्वारा कार्यक्रम के संबंध में भूमिका प्रस्तुत की गई। उन्होंने कहा हमारे लोकगीत हमारी धरोहर हैं और इस धरोहर को संजोकर रखना हम महिला शक्ति का ही उत्तरदायित्व एवं कर्तव्य है। हमारी लोकगीतों में भावना है

कर्तव्य है प्रेम, ममता है। भाई बहन का निश्छल स्नेह है। बेटी की गुहार अपने पिता के लिए है। साथ में ही नंद भाभी की नोक झोंक भी। लोकगीत की अनुभूति एवं आनंद तनाव से दूर ले जाकर एक अलौकिक आनंद प्रदान करता है। शिवांगी चतुर्वेदी द्वारा उपस्थित समस्त पदाधिकारी एवं संरक्षकों का आभासी स्वागत किया गया। कार्यक्रम को पूर्व सभापति एवं संरक्षक डॉक्टर प्रदीप चतुर्वेदी द्वारा भी संबोधित किया गया। सावन की आई गई तीजें। चालम चूड़ियां हमको ले दो झुलागीत

सभापति उषा चतुर्वेदी द्वारा गया गया। कार्यक्रम में राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखंड , उत्तराखंड, बिहार, बंगाल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, सिंगापुर, कश्मीर कुवैत हरियाणा, दिल्ली आदि प्रांतों की महिलाओं ने भागीदारी की एवं उपस्थिति दर्ज कराई। विशेष कर ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं भी इस कार्यक्रम में जुड़ी। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आभा चतुर्वेदी नागपुर ,राष्ट्रीय मंत्री चंचीता चतुर्वेदी लखनऊ, राष्ट्रीय मंत्री अभय राज गुड़गांव राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अंशुमन जयपुर से, डॉक्टर कुश चतुर्वेदी इटावा से, संजय चतुर्वेदी गुजरात से, मधुपम एवं नीमा चतुर्वेदी मुंबई से, दिलीप सिकंदर पुरिया संपादक चतुर्वेदी चंद्रिका, धर्मेश चतुर्वेदी होली गायक मैनपुरी से पूरे समय उपस्थित रहे। अंत में महासभा राष्ट्रीय सचिव के शशांक चतुर्वेदी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया। जूम पर कार्यक्रम संचालित करने में ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी कोषाध्यक्ष दिल्ली का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में माथुर चतुर्वेदी महासभा के संरक्षक भरत चतुर्वेदी एडवोकेट की उपस्थिति भी उत्साहवर्धन कर रही थी।

बिछड़े स्वजन

* श्री बैकुण्ठनाथ पाठक (बटेश्वर/आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 23/07/2024 को आगरा में हो गया।

* श्री आलोक जी पुत्र स्वर्गीय सुरेंद्र नाथ जी (जहांगीरपुर / लखनऊ) का अल्पायु में प्राणांत 23 जुलाई 2024 को हो गया।

* श्रीमती उमा मिश्रा जी पत्नी श्री भोलानाथ मिश्रा (चंद्रपुर/भोपाल) का स्वर्गवास दिनाँक 25 जुलाई को प्रातः हो गया।

* डॉ. अजय कुमार चतुर्वेदी (हाथरस/अलीगढ़) का स्वर्गवास दिनाँक 20/7/24 को हो गया।

* श्रीमती लता पत्नी स्व. मणिकांत जी (मैनपुरी/एटा) का स्वर्गवास 3 अगस्त 2024 को मैनपुरी में हो गया।

* श्री योगेश चतुर्वेदी @ बब्बू भाई का दिनाँक 13 अगस्त 2024 को रात करीब 10 बजे बांदीकुई में स्वर्गवास हो गया।

* श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी पत्नी श्री अजय चतुर्वेदी (जहांगीरपुर/कासगंज) का स्वर्गवास 65 वर्ष की आयु में दिनाँक 12 अगस्त 2024 को कासगंज में हो गया।

* श्री सुधाकर चतुर्वेदी (एडवोकेट) पुत्र स्व. श्री सुंदरलाल जी (तरसोखर/कटनी) का स्वर्गवास दिनांक 15 अगस्त 24 को कटनी में हो गया।

* श्रीमती लाली देवी चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री हरिप्रसाद चतुर्वेदी (तरसोखर/मथुरा) का स्वर्गवास दिनांक 12 अगस्त 2024 को मथुरा में हो गया।

* श्रीमती शान्ति चतुर्वेदी पत्नी स्वर्गीय श्री अविनाश चतुर्वेदी (फर्रुखाबाद/साहिबाबाद) का स्वर्गवास दिनाँक 19 अगस्त 2024 को हो गया।

* श्री दिनेश किशोर चतुर्वेदी (बच्चूजी) पुत्र स्व. पुरुषोत्तम लाल चतुर्वेदी (कोटा) का स्वर्गवास कोटा में दिनाँक 21 अगस्त 2024 को हो गया।

* श्री राजेश चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री राधारमण चतुर्वेदी जी,बटन चौबे (नीमच/ आगरा) का स्वर्गवास दिनांक 21.08.2024 को आगरा में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

प्रथम पुण्य तिथि

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

–: जन्म :–
27 सितम्बर 1930

–: निर्वाण :–
28 अगस्त 2023

स्व. श्री देवकीनंदनजी चतुर्वेदी

पुत्र स्व. पुरुषोत्तमलाल चतुर्वेदी कोटा

आपकी सादगी, निर्भिकता, स्पष्टवादिता एवं आपके आदर्श सदैव
हमें कर्तव्य पथ पर निरन्तर बढ़ते रहने की प्रेरणा देते रहेंगे।

शोक संतप्त

पत्नि	:	ललिता देवी
पुत्र–पुत्रवधु	:	प्रदीप कुमार–इन्द्रलता, विजय–कनक, स्व. संजय–कविता, विनय–अरुणा
पौत्र–पौत्रवधु	:	मोहित–आराधना, अभिषेक–पूजा, एकांश–गुंजन
पौत्र	:	सिद्धार्थ, कबीर
पौत्री–दामाद	:	पल्लवी–तरुण, सोनाली–अंकुश
पड़पौत्र–पौत्री	:	मिष्ठी, काव्या, राम, कृष्णा, मोली एवं तक्ष

प्रतिष्ठान : चतुर्वेदी कृषि फार्म, राजनगर कोटा, पुरुषोत्तम रेजिडेंसी राजनगर, कोटा
पता : 757, शास्त्रीनगर, दादाबाड़ी, कोटा–324009
मोबा. : 6375428298, 9413470788, 9414180892

(र.क्र. 2488)

नवीं पुण्यतिथि

श्रद्धेय प्रभात कुमार चतुर्वेदी (इटावा)

सुपुत्र : साक्षी गोपाल चतुर्वेदी एवं माधवी चतुर्वेदी

(पूर्व उप सभापति श्री माधुर चतुर्वेदी महासभा)

जन्म : 21 जुलाई 1943 निर्वाण : 10 सितंबर 2015

श्रद्धावनत

पत्नी : श्रीमती सुधा चतुर्वेदी	(पुत्र-पुत्रवधु) : डॉ. मुदित चतुर्वेदी-शुंजन चतुर्वेदी
बहन : स्व. पुष्पा मिश्रा (जयपुर)	(पुत्री एवं दामाद) : शिवानी-ललित चतुर्वेदी (दानपुर)
बहन : प्रतिभा चतुर्वेदी (कोटा)	(पुत्री एवं दामाद) : सपना-विकास चतुर्वेदी (कानपुर)
बहन : शोभा मिश्रा (मुम्बई)	(पुत्री एवं दामाद) : अर्चना-आशीष चतुर्वेदी (इंदौर)
बहन : विभा चतुर्वेदी (अहमदाबाद)	(पौत्र) : समर्थ चतुर्वेदी एवं सक्षम चतुर्वेदी

पता 1 : डॉ. मुदित चतुर्वेदी, मकान नं. 27
मेन ग्रीन पार्क, बरेली

पता 1 : 338, छिपैटी चौपार, इटावा - 206001

मोबाइल : 9896506222

AI Assistant

(र.क्र. 2459)

Bharatgas
COOK FOOD. SERVE LOVE.

रसोई ने पकाई खुशी,
प्यार भरे रिश्ते और संतुष्टता की
खुशबूदार पोटली...

रसोई गैस के निरंतर
आपूर्ति के देदीप्यमान ४३ साल...

अँधेरा अँधेरे से नहीं,
बल्कि रोशनी के किरण से ही मिट सकता है...!
ऐसे ही जलगांव के हजारों परिवारों में 'रेखा गैस' की पारदर्शी,
सुरक्षित, एको-फ्रेंडली और साफसुथरी सेवा ने बिखेरी हैं
संतुष्टता की खुशियाँ...
जीवनशैली को बनाया है सुन्दर और अधिक ख़ुशहाल!

साथ ही समाज परिवर्तन में 'रेखा गैस'
हमेशा देती रहेगी अपना योगदान...

रेखा गॅस एजन्सी

दु. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001 फोन : (0257) 2221095,
2221195, 2225195, 2228495. | rekhagas20032003@rediffmail.com

malhar.org

(र.क्र. 2460)

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' सितम्बर 2024

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

युवा पीढ़ी को मांगलिक अवसरों पर भेंट करिये माथुर चतुर्वेदी समाज की ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत

श्री संतोष चौबे
(संरक्षक – श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा)

डॉ. विनीता चौबे
(संपादक सलाहकार मंडल सदस्य/
पूर्व संपादक – चतुर्वेदी चंद्रिका)

खण्ड 1 (मूल्य : ₹ 600)

खंड 2 (मूल्य : ₹ 700)

खंड 3 (मूल्य : ₹ 500)

खंड 4 (मूल्य : ₹ 600)

खंड 5 (मूल्य : ₹ 500)

खंड 6 (मूल्य : ₹ 800)

खंड 7 (मूल्य : ₹ 800)

खंड 8 (मूल्य : ₹ 800)

खंड 9 – (मूल्य : ₹ 600)

खंड 10 – (मूल्य : ₹ 700)

खंड 11 (मूल्य : ₹ 700)

खंड 12 (मूल्य : ₹ 700)

नोट : समग्र खंडों के सेट की खरीद पर कुल मूल्य 8000/-पर विशेष छूट (25 प्रतिशत) के बाद 6000/- की राशि + पोस्टल खर्च रुपये 100/-देय होगा।

संपर्क – आईसेक्ट, एसजीएसयू कैंपस, एन.एच. 12, नर्मदापुरम रोड, मिसरोद-462047 (मप्र)
फोन : +91-755-2432801, +91-9977922506, +91-9039535983

(र.क्र. 2554)